दारोगा की मेहनत ठिकाने लगी, और वह इस दुनिया से कूच कर गया। सच तो यों है कि बड़ा भारी काँटा निकल गया। अब साल-भर के लिए शादी रुक गयी, और इस बीच में हम लोग बहुतकुछ कर गुजरेंगे।

वही—भूत।"

चीठी पूरी करने के साथ ही तेजसिंह की आँखों से आँसू की बूँदें टपकने लगीं और उन्होंने एक लम्बी साँस लेकर कहा, "अफसोस ! यह बात किसी को भी मालूम न हुई कि राजा गोपालसिंह का बाप इन दुष्टों की चाल-बाजियों का शिकार हुआ। बेचारा बड़ा ही लायक और बात का धनी था।"

तारा यद्यपि बड़ी मुश्किल से अपने दिल को रोके हुए यह सब तमाशा देख और सुन रही थी, मगर इस चीठी ने उसके साहस में विघ्न डाल दिया और उसे सभों की आँखें बचाकर आँचल के कोने से अपने आँसू पोंछने पड़े। किशोरी, कामिनी, लाडिली, कमलिनी और ऐयारों का दिल भी हिल गया, और भूतनाथ की सूरत घृणा के साथ उनकी आँखों के सामने घूमने लगी। तेजसिंह ने कागज का मुट्ठा जमीन पर रख दिया और अपने दिल को सम्हालने की नीयत से सर उठाकर सरसब्ज पहाड़ियों की तरफ देखने लगे। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा, इसके बाद तेजसिंह ने कागज का मुट्ठा उठा लिया और पढ़ने लगे।

"मेरे भाग्यशाली मित्र हेलासिंह,

मुबारक हो ! आज हमारी जहरीली मिठाई बलभद्रसिंह के घर में जा पहुँची। इसका जोकुछ नतीजा देखूँगा, अगली चीठी में लिखूँगा। वास्तव में तुम किस्मतवर हो !

वही—भूत।"

कमलिनी : हाय कमबख्त, तेरा सत्यानाश हो !

लाडिली : चाण्डाल कहीं का, ऐसा सत्यानाशी और हम लोगों के साथ रहे ! छीः छीः !!

तारा : (तेजसिंह से) हाय, मेरा जी डूबा जाता है, मैं हाथ जोड़ती हूँ इसके बादवाली चीठी शीघ्र पढ़िए, जिसमें मालूम हो कि उस विश्वासघाती की मिठाई का क्या नतीजा निकला।

सब : हाँ हाँ, यहाँ पर हम लोग नहीं रुक सकते, शीघ्र पढ़िए।

तेज : मैं पढ़ता हूँ—

"श्रीमान प्यारे बन्धु हेलासिंह,

खुशी मनाइए कि मेरी मिठाई ने लक्ष्मीदेवी की माँ, लक्ष्मीदेवी के छोटे भाई और दो लौंडियों का काम तमाम कर दिया। बलभद्रसिंह और उसकी

तीनों लड़कियों ने मिठाई नहीं खायी थी, इसलिए बच गयीं। खैर, फिर सही, जाते कहाँ हैं।

वही—भूत।"

इस चीठी ने तो अन्धेर कर दिया। कोई भी ऐसा नहीं था, जिसकी आँख से आँसू न निकलते हों। कमलिनी और लाडिली रोने लगीं, और लक्ष्मीदेवी तो चिल्लाकर बोली, "हाय, इस समय मुझे लड़कपन की सब बातें याद आ रही हैं। वह समा मेरी आँखों के सामने घूम रहा है। मेरे घर में वैद्यों की धूम मची हुई थी, मेरी प्यारी माँ अपने लड़के की लाश पर पछाड़ें खा रही थी, अन्त में वह भी मर गयी। हम लोग रो-रोकर लाश के साथ चिमटते थे, और हमारा बाप हम लोगों को खैंच-खैंचकर अलग करता था। हाय! क्या दुनिया में कोई ऐसी सजा है, जो इस बात का पूरा बदला कहला सके!!"

किशोरी : (रोकर) कोई नहीं, कोई नहीं!

कमलिनी : हाय मेरे कलेजे में दर्द होने लगा! किस दुष्ट का जीवन-चरित्र मैं सुन रही हूँ! बस अब मुझमें सुनने की सामर्थ्य नहीं रही, (रोकर) ओफ, इतना जुल्म! इतना अन्धेर!

भैरो : बस रहने दीजिए, अब इस समय आगे न पढ़िए।

तेज : इस समय मैं आगे पढ़ ही नहीं सकता।

तेजसिंह ने कागज का मुट्ठा लपेटकर रख दिया और सभों को दिलासा और तसल्ली देने लगे। तेजसिंह का इशारा पाकर भैरोसिंह और देवीसिंह कई तीतर और बटेर शिकार कर लाये, और उसका कबाब तथा शोरबा बनाने लगे, जिसमें सभों को खिला-पिलाकर शान्त करें।

आज खाने-पीने की इच्छा किसी की भी न थी, मगर तेजसिंह के समझाने-बुझाने से सभों ने कुछ खाया और जब शान्त हुए तो तेजसिंह ने कहा, "अब हमको तालाबवाले मकान में चलना चाहिए।"

बलभद्र : हाँ, अब इस जगह रहना ठीक न होगा, मकान में चलकर जो-कुछ पढ़ना या देखना हो पढ़ियेगा।

कमलिनी : मेरी भी यही राय है। मैं देवीसिंहजी से कह चुकी हूँ कि यदि मैं उस मकान में रहती, तो दुश्मन हमारा कुछ भी न बिगाड़ सकते, और तालाब को पाट देना तो असम्भव ही था। खैर, अब भी मैं बिना परिश्रम के उस तालाब की सफाई कर सकती हूँ।

इतना कहकर कमलिनी ने तालाबवाले मकान का बहुत-सा भेद तेजसिंह को बताया, और जिस तरह से तालाब की सफाई हो सकती थी, वह भी कहा जोकि हम ऊपर भी लिख आये हैं। अन्त में सभों ने निश्चय कर

लिया कि घण्टे-भर के अन्दर इस जगह को छोड़ देना, और तालाबवाले मकान में चले जाना चाहिए।

दूसरा बयान

सुबह का सुहावना समय है। पहिले घण्टे की धूप ने ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की टहनियाँ, मकान के कंगूरों और पहाड़ों की चोटियों पर सुनहरी चादर बिछा दी है। मुसाफिर लोग दो-तीन कोस की मंजिल मार चुके हैं। तारासिंह और श्यामसुन्दरसिंह अपने साथ भगवनिया और भूतनाथ को लिये हुए तालाबवाले तिलिस्मी मकान की तरफ जा रहे हैं। उनके दोनों साथी, अर्थात् भगवनिया और भूतनाथ अपने-अपने गम में सिर नीचा किये चुपचाप पीछे-पीछे जा रहे हैं। भूतनाथ के चेहरे पर उदासी और भगवनिया के चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई है। कदाचित भूतनाथ के चेहरे पर भी मुर्दनी छायी हुई होती या वह इन लोगों में न दिखायी देता, यदि उसे इस बात की खबर होती कि तारा की किस्मतवाली गठरी तेजसिंह के हाथ लग गयी है, और तारा तथा बलभद्रसिंह का भेद खुल गया है। वह तो यही सोचे हुए था कि तारा अपने बाप को नहीं पहिचानेगी, बलभद्रसिंह अपने को छिपावेगा, और देवीसिंह मेरे भेदों को गुप्त रखने का उद्योग करेगा। बस इतनी ही बात थी, जिससे वह एकदम हताश नही हुआ था, और इन लोगों के साथ कमलिनी से मिलने के लिए चुपचाप सिर झुकाये हुए कुछ सोचता-विचारता जा रहा था। वह अपनी धुन में ऐसा डूबा हुआ था कि उसे अपने चारों तरफ की कुछ भी खबर न थी, और उसकी वह धुन उस समय टूटी जब तारासिंह ने कहा, "वह देखो तालाबवाला तिलिस्मी मकान दिखायी देने लगा। कई आदमी भी नजर पड़ते हैं। मालूम पड़ता है कि उसमें कमलिनी का डेरा आ गया। अगर मेरी निगाह धोखा नहीं देती तो मैं कह सकता हूँ कि वह चबूतरे के दक्षिणी कोने पर खड़े होकर, जो इसी तरफ देख रहे हैं, हमारे चाचा तेजसिंह हैं!"

तेजसिंह के नाम ने भूतनाथ को चौंका दिया और उसके दिल में एक नया शक पैदा हुआ। इसके साथ ही उसके चेहरे की रंगत ने पुनः पल्टा खाया, अर्थात् जर्दी के बाद सुर्खी ने अपना कुदरती रंग दिखाया, और भूतनाथ का काँपता हुआ पैर धीरे-धीरे आगे की तरफ बढ़ने लगा। जब ये लोग मकान के पास पहुँच गये तो भूतनाथ ने देखा कि भैरोसिंह और देवीसिंह भी अन्दर से निकल आये हैं और नफरत की निगाह से उसे देख रहे हैं। जब ये लोग तालाब के किनारे पहुँचे तो भगवनिया ने देखा कि तालाब की

मिट्टी न मालूम कहाँ गायब हो गयी है, तालाब स्वच्छ है, और उसमें मोती की तरह साफ जल भरा हुआ दिखायी देता है। वह बड़े आश्चर्य से तालाब के अन्दर और उसके बीचवाले मकान को देखने लगी।

भैरोसिंह उन लोगों को ठहरने का इशारा करके मकान के अन्दर गया और थोड़ी देर बाद बाहर निकला, इसके बाद डोंगी खोलकर किनारे पर ले गया और चारों आदमियों को सवार कराके मकान के अन्दर ले आया।

श्यामसुन्दरसिंह और भगवानी को विश्वास था कि यह मकान हर तरह के सामान से खाली होगा, यहाँ तक कि चारपाई, बिछावन और पानी पीने के लिए लोटा-गिलास तक न होगा, मगर नहीं, इस समय यहाँ जोकुछ सामान उन्होंने देखा वह बनिस्बत पहिले के बेशकीमत और ज्यादे था। इसका कारण यह था कि दुश्मन लोग इस मकान में से वही चीजें ले गये थे, जिन्हें वे लोग देख और पा सकते थे मगर इस मकान के तहखानों और गुप्त कोठरियों का हाल उन्हें मालूम न था, जिनमें एक-से-एक बढ़के उम्दा चीजें तथा बेशकीमत असबाब मकान सजाने के लिए भरा हुआ था, और जिन्हें इस समय कमलिनी ने निकालकर मकान को पहिले से ज्यादे खूब-सूरती के साथ सजा डाला था, और भागे हुए आदमियों में से दो सिपाही और दो नौकर भी आ गये थे, जो भाग जाने के बाद भी छिपे-छिपे इस मकान की खोज-खबर लिया करते थे।

तारासिंह, श्यामसुन्दरसिंह, भगवनिया और भूतनाथ उस कमरे में पहुँचाये गये, जिसमें किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, लाडिली और बलभद्रसिंह वगैरह बैठे हुए थे, और किशोरी, कामिनी और लक्ष्मीदेवी सुन्दर मसहरियों पर लेटी हुई थीं।

बलभद्रसिंह को असली सूरत में देखते ही भूतनाथ चौंका और घबड़ा-कर दो कदम पीछे हटा, मगर भैरोसिंह ने जो उसके पीछे था, रोक लिया। बलभद्रसिंह को असली सूरत में देखकर भूतनाथ को विश्वास हो गया कि उसका सारा भेद खुल गया और इस बारे में उस समय तो कुछ भी शक न रहा, जब उस कागज के मुट्ठे और पीतल की सन्दूकड़ी को भी कमलिनी के सामने देखा, जो भूतनाथ की विचित्र जीवनी का पता दे रही थी। जिस समय भूतनाथ की निगाह उनके चेहरे पर गौर के साथ पड़ी, जिनसे रंज और नफरत साफ जाहिर होती थी, उस समय उसके दिल में एक हौल-सा पैदा हो गया, और उसकी सूरत देखनेवालों को ऐसा मालूम हुआ कि वह थोड़ी ही देर में पागल हो जायगा, क्योंकि उसके हवास में फर्क पड़ गया था, और वह बड़ी ही बेचैनी के साथ चारों तरफ देखने लगा था।

बलभद्र : भूतनाथ, मैं अफसोस करता हूँ कि तुम्हारे भेदों को कुछ दिन

तक और छिपा रखने का मौका मुझे न मिला !!

देवी : जिस गठरी में तारा की किस्मत बन्द थी, और जिसे तुम अपने सामने देख रहे हो, वह वास्तव में तेजसिंह के कब्जे में आ गयी थी।

बलभद्र : जिस नकाबपोश ने तुम्हारे सामने मुझे पराजित किया था, वह तेजसिंह थे, और इस समय तुम्हारे बगल में खड़े हैं। हैं हैं ! देखो सम्हलो ! पागल मत बनो।

भूतनाथ : (लड़खड़ाई हुई आवाज से) ओह ! उस औरत को धोखा हुआ ! उसने नकाबपोश को वास्तव में नहीं पहिचाना !

भूतनाथ पागलों की तरह हाथ-मुँह फैला और आँखें फाड़-फाड़कर चारों तरफ देखने लगा, और फिर चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

तेज : बुरे कामों का यही नतीजा निकलता है।

देवी : इससे कोई पूछे कि ऐसे-ऐसे खोटे कर्म करके दुनिया में तूने क्या मजा पाया ? मैं समझता हूँ कि यह अपनी जान दे देगा, या यहाँ से भाग जाना पसन्द करेगा।

बलभद्र : हाँ, यदि इसकी एक बहुत ही प्यारी चीज मेरे कब्जे में न होती तो बेशक यह अपनी जान दे देता या भाग ही जाता, मगर अब यह ऐसा नहीं कर सकता है।

कमलिनी : वह कौन-सी चीज है ?

बलभद्र : जल्दी न करो, उसका हाल भी मालूम हो जायेगा।

तेज : खैर, आप यह तो बताइए कि इसके साथ क्या सलूक करना चाहिए ?

बलभद्र : कुछ नहीं इसे इसी तरह उठाकर तालाब के बाहर रख आओ और छोड़ दो, जहाँ भी जी चाहे चला जाय।

कमलिनी (तेजसिंह से) क्या आपको मालूम है कि इसका लड़का नानक आजकल कहाँ है ?

तेज : मुझे नहीं मालूम।

किशोरी : इसका केवल एक ही लड़का है ?

तेज : क्या तुम्हें अभी तक किसी ने नहीं कहा कि भूतनाथ की पहली स्त्री से एक लड़की भी है, जिसका नाम कमला है और जो तुम्हारी प्यारी सखी है ? हाय, मैं अफसोस करता हूँ कि इस दुष्ट का हाल सुनकर उस बेचारी को बड़ा ही दुःख होगा। मैं सच कहता हूँ कि कमला ऐसी लायक लड़की बहुत कम देखने-सुनने में आवेगी।

इतना सुनते ही भैरोसिंह के चेहरे पर खुशी की निशानी दिखायी देने

लगी, जिसे उसने बड़ी होशियारी से तुरन्त दवा दिया और किशोरी सिर नीचा करके न मालू क्या सोचने लगी।

तेज : (बलभद्रसिंह से) अच्छा तो यह निश्चय हो गया कि इसे तालाब के बाहर छोड़ आया जाय ?

बलभद्र : हाँ, मेरी राय में तो ऐसा ही होना चाहिए।

कमलिनी : क्या इसे कुछ भी सजा न दी जायगी ? इसका तो इसी समय सिर उतार लेना चाहिए ?

बलभद्र : (ताज्जुब से कमलिनी की तरफ देखके) तुम ऐसा कहती हो ? मुझे आश्चर्य होता है। शायद गम ने तुम्हारी अक्ल में फर्क डाल दिया है। इसे मार डालने से क्या हमारा बदला पूरा हो जायगा ?

कमलिनी ने शर्माकर सिर नीचे कर लिया, और तेजसिंह का इशारा पाकर भैरोसिंह और देवीसिंह ने भूतनाथ को तालाब के बाहर पहुँचा दिया। तारासिंह और श्यामसुन्दरसिंह आश्चर्य से सभी का मुँह देख रहे थे कि यह क्या मामला है, क्योंकि इधर जोकुछ गुजरा था, उसका हाल उन्हें कुछ भी मालूम न था।

ऊपर लिखे कामों से छुट्टी पाकर तेजसिंह ने तारासिंह को एक किनारे ले जाकर वह हाल सुनाया, जो इधर गुजर चुका था, और फिर अपने ठिकाने आ बैठे। इसके बाद कमलिनी ने बलभद्रसिंह से कहा—"मेरा जी इस बात को जानने के लिए बेचैन हो रहा है कि इतने दिनों तक आप कहाँ रहे, किस स्थान में रहे और क्या करते रहे ! आप पर क्या-क्या मुसीबतें आयीं और हम लोगों का हाल जानकर भी आपने इतने दिनों तक हम लोगों से मुलाकात क्यों नहीं की ? क्या आप नहीं जानते थे कि हमारी लड़कियाँ कहाँ और किस मुसीबत में पड़ी हुई हैं ?"

बलभद्र : इन सब बातों का जवाब मिल जायगा, ज़रा सब्र करो और घबड़ाओ मत। पहिले उन चीठियों को सुन जाओ, फिर इसके बाद जो-कुछ तुम्हें पूछना हो पूछना, और मुझे भी जोकुछ तुम्हारे विषय में मालूम नहीं है, पूछूँगा। (तेजसिंह से) यदि इस समय कोई आवश्यक काम न हो तो आप उन चीठियों को पढ़िए या पढ़ने के लिए किसी को दीजिए।

तेजसिंह : नहीं नहीं, (कागज के मुट्ठे की तरफ देखके) इन चीठियों को मैं स्वयं पढ़ूँगा और इस समय हम लोग सब कामों से निश्चिन्त भी हैं, हाँ, तारासिंह को यदि कुछ···

तारा : नहीं, मुझे कोई काम नहीं है, केवल भगवनिया के विषय में पूछना है कि इसके साथ क्या सलूक किया जाय ?

तेज : इसका जवाब कमलिनी के सिवाय और कोई नहीं दे सकता।

यह कह उन्होंने कमलिनी की तरफ देखा।

कमलिनी : (भैरोसिंह से) आपको यहाँ का सब हाल मालूम हो चुका है, इसलिए आप ही तहखाने तक जाने की तकलीफ उठाइए।

"बहुत अच्छा" कहकर भैरोसिंह उठ खड़ा हुआ और भगवानी की कलाई पकड़े हुए बाहर चला गया। कमलिनी ने श्यामसुन्दरसिंह से कहा, "अब तुम्हें भी यहाँ न ठहरना चाहिए, बस तुरन्त चले जाओ और हमारे आदमियों को जो दुश्मन के सताने से इधर-उधर भाग गये हैं, जहाँ तक हो सके ढूँढ़ो, तथा हमारे यहाँ आ जाने की खुशखबरी सुनाओ। बस चले ही जाओ, यहाँ अटकने की कोई जरूरत नहीं।"

श्यामसुन्दरसिंह चाहता था कि वह यहाँ रहे और उन घटनाओं का हाल पूरा-पूरा जाने जो बलभद्रसिंह और भूतनाथ से सम्बन्ध रखती हैं, क्योंकि बलभद्रसिंह को देखके भूतनाथ की जो हालत हुई थी, उसे वह अपनी आँखों से देख चुका था, और उसका सबब जानने के लिए बहुत ही बेचैन भी था—मगर कमलिनी की आज्ञा सुनकर उसका अथाह उत्साह टूट गया, और वहाँ से चले जाने के लिए मजबूर हुआ। वह अपने दिल में समझे हुए था कि उसने भगवानी को पकड़के बड़ा काम किया है, इसके बदले में कमलिनी उससे खुश होगी, और उसकी तारीफ करके उसका दर्जा बढ़ावेगी मगर वह बातें तो दूर ही रहीं कमलिनी ने उसे वहाँ से चले जाने के लिए कहा। इस बात का श्यामसुन्दरसिंह को बहुत रंज हुआ, मगर क्या कर सकता था। लाचार मुँह बनाकर पीछे की तरफ मुड़ा, इसके साथ ही देवीसिंह भी कमलिनी का इशारा पाकर उठे और श्यामसुन्दरसिंह को तालाब के बाहर पहुँचाने को चले।

जब श्यामसुन्दरसिंह को पहुँचाने के लिए देवीसिंह तालाब के बाहर गये तो उन्होंने देखा कि भूतनाथ, जिसे बेहोशी की अवस्था में तालाब के बाहर पहुँचा दिया गया था, अब होश में आकर तालाब के ऊपरवाली सीढ़ी पर चुपचाप बैठा हुआ है।

देवीसिंह को इस पार आते हुए देखकर वह उठा, और पास आकर देवीसिंह की कलाई पकड़कर बोला, "जोकुछ मैं कहा चाहता हूँ, उसे सुन लो, तब यहाँ से जाना।"

देवीसिंह ने कहा, "बहुत अच्छा, कहो मैं सुनने के लिए तैयार हूँ। (श्यामसुन्दरसिंह से) तुम क्यों खड़े हो गये? जाओ जो काम तुम्हारे सुपुर्द हुआ है, उसे करो।" देवीसिंह की बात सुनकर श्यामसुन्दरसिंह को और भी रंज हुआ, और वह मुँह बनाकर चला गया।

देवी : (भूतनाथ से) अब जोकुछ तुम्हें कहना हो, कहो।

भूतनाथ : पहिले आप यह बताइए कि मुझे इस बेइज्जती के साथ बँगले के बाहर क्यों निकाल दिया ?

देवी : क्या तुम स्वयं इस बात को नहीं सोच सके ?

भूतनाथ : मैं क्योंकर समझ सकता था ? हाँ, इतना मैंने अवश्य देखा कि सभों की जो निगाह मुझ पर पड़ रही थी, वह रंज और घृणा से खाली न थी, मगर कुछ सबब मालूम न हुआ।

देवी : क्या तुमने बलभद्रसिंह को नहीं देखा ? क्या उस गठरी पर तुम्हारी निगाह नहीं गयी, जो तेजसिंह के सामने रक्खी हुई थी ? और क्या तुम नहीं जानते कि उस कागज के मुट्ठे में क्या लिखा हुआ है ?

भूतनाथ : तब नहीं तो अब मैं इतना समझ गया कि उस आदमी ने जो अपने को बलभद्रसिंह बताता है, मेरी चुगली खायी होगी, और मेरे झूठे दोष दिखलाकर मुझ पर बदनामी का धब्बा लगाया होगा—मगर मैं आपको होशियार कर देता हूँ कि वह वास्तव में बलभद्रसिंह नहीं है, बल्कि पूरा जालिया और धूर्त है, निःसन्देह वह आप लोगों को धोखा देगा। यदि मेरी बातों का विश्वास न हो तो मैं इस बात के लिए तैयार हूँ कि आप लोगों में से कोई एक आदमी मेरे साथ चले, मैं असली बलभद्रसिंह को जो वास्तव में लक्ष्मीदेवी का बाप है और अभी तक कैदखाने में पड़ा हुआ है, दिखला दूँगा। मैं सच कहता हूँ कि उस कागज के मुट्ठे में जोकुछ लिखा हुआ है, यदि उसमें किसी तरह भी मेरी बुराई है तो बिल्कुल झूठ है।

देवी : मैं केवल तुम्हारे इतना कहने पर क्योंकर विश्वास कर सकता हूँ ! मैं तुम्हारे अक्षर अच्छी तरह पहिचानता हूँ, जो उस कागज के मुट्ठे की लिखावट से बखूबी मिलते हैं। खैर, इसे भी जाने दो, मैं यह पूछता हूँ कि बलभद्रसिंह को वहाँ देखकर तुम इतना डरे क्यों ? यहाँ तक कि डर ने तुम्हें बेहोश कर दिया।

भूतनाथ : यह तो तुम जानते ही हो कि मैं उससे डरता हूँ, मगर इस सबब से नहीं डरता कि वह कमलिनी का बाप बलभद्रसिंह है, बल्कि उससे डरने का कोई दूसरा ही सबब है, जिसके विषय में मैं कह चुका हूँ कि आप मुझसे न पूछेंगे, और यदि किसी तरह मालूम हो जाय तो बिना मुझसे पूछे किसी पर प्रकट न करेंगे।

देवी : अच्छा इस बात का जवाब तो दो कि अगर तुम्हें यह मालूम था कि कमलिनी का बाप किसी जगह कैद है, और तारा वास्तव में लक्ष्मीदेवी है, जैसाकि तुम इस समय कह रहे हो तो आज तक तुमने कमलिनी को इस बात की खबर क्यों न दी ? या यह बात क्यों न कही कि 'मायारानी वास्तव में तुम्हारी बहिन नहीं है'।

भूतनाथ : इसका सबब यही था कि असली बलभद्रसिंह ने जो अभी तक कैद हैं, और जिनके छुड़ाने की मैं फिक्र कर रहा हूँ, मुझसे कसम ले ली है कि जब तक वे कैद से न छूटें, मैं उनके और लक्ष्मीदेवी के विषय में किसी से कुछ न कहूँ, और वास्तव में अगर मुझ पर इतनी विपत्ति न आ पड़ती तो मैं किसी से कहता भी नहीं। मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि मैं तो अपनी जान हथेली पर रखके आप लोगों का काम करूँ और आप लोग बिना समझे-बूझे और असल बात को बिना जाँचे दूध की मक्खी की तरह मुझे निकाल फेंकें। क्या मुरौवत नेकी और धर्म इसी को कहते हैं ? क्या यही जवाँमर्दों का काम है ? आख़िर मुझ पर इलज़ाम तो लग ही चुका था, मगर मेरी और उस दुष्ट की, जो कमलिनी का बाप बनके मकान के अन्दर बैठा हुआ है, दो-दो बातें तो हो लेने देते !

भूतनाथ की बात सुनकर देवीसिंह को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह कुछ देर तक सिर नीचा किये हुए सोचते रहे, इसके बाद कुछ याद करके बोले, "अच्छा मेरी एक बात का और जवाब दो।"

भूतनाथ : पूछिए।

देवी : यदि तुम्हें उस कागज के मुट्ठे से कुछ डर न था और वास्तव में जोकुछ उस मुट्ठे में तुम्हारे खिलाफ लिखा हुआ है, वह झूठ है जैसाकि तुम अभी कह चुके हो, तो तुम उस गठरी को देखके उस समय क्यों डरे थे, जब बलभद्रसिंह ने रात के समय उस जंगल में तुम्हें वह गठरी दिखायी थी और पूछा था कि यदि कहो तो भगवानी के सामने इसे खोलूँ ? मैं सुन चुका हूँ कि उस समय इस गठरी को देखकर तुम काँप गये थे और नहीं चाहते थे कि भगवानी के सामने वह खोली जाय !

भूतनाथ : ठीक है, मगर मैं उस कागज के मुट्ठे को याद करके नहीं डरा था, बल्कि मुझे इस बात का गुमान भी न था कि इस गठरी में कोई कागज का मुट्ठा भी है, सच तो यों है कि मैं उस पीतल की सन्दूकड़ी को याद करके डरा था, जो उस समय तेजसिंह के सामने पड़ी हुई थी। मैं यही समझे हुए था कि उस गठरी के अन्दर केवल एक पीतल की सन्दूकड़ी है, और वास्तव में उसकी याद से ही मैं काँप जाता हूँ। उसकी सूरत देखने से जो हालत मेरी होती है, सो मैं ही जानता हूँ, मगर साथ ही इसके मैं यह भी कहे देता हूँ कि उस पीतल की सन्दूकड़ी के अन्दर जो चीज़ है, उससे कमलिनी, तारा और लाडिली या असली बलभद्रसिंह का कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका विश्वास आपको उसी समय हो जायगा, जब वह सन्दूकड़ी खोली जायगी।

भूतनाथ की बातों ने देवीसिंह को चक्कर में डाल दिया। वह कुछ भी

नहीं समझ सकते थे कि वास्तव में क्या बात है। देवीसिंह ने जो बातें भूतनाथ से पूछीं, उनका जवाब भूतनाथ ने बड़ी खूबी के साथ दिया, न तो कहीं अटका और न किसी तरह का शक रहने दिया और ये ही बातें थीं, जिन्होंने देवीसिंह को तरद्दुद परेशानी और आश्चर्य में डाल दिया था। बहुत देर गौर करने के बाद देवीसिंह ने पुनः भूतनाथ से पूछा।

देवी : अच्छा अब तुम क्या चाहते हो सो कहो ?

भूतनाथ : मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि आप मुझे इस मकान में ले चलिए, और तेजसिंह तथा तीनों बहिनों से कहिए कि मेरे मुकदमे की पूरी-पूरी जाँच करें, आप लोगों के आगे निर्दोष होने के विषय में जोकुछ मैं सबूत दूं, उसे अच्छी तरह सुनें, समझें और देखें तथा इसके बाद जो दगाबाज़ ठहरे उसे सज़ा दें, बस।

देवी : अच्छा, मैं जाकर तेजसिंह और कमलिनी से ये बातें कहता हूँ, फिर जैसा वे कहेंगे किया जायगा।

भूतनाथ : तो आप एक काम और कीजिए।

देवी : वह क्या।

इसके जवाब में भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से एक तस्वीर निकालकर देवीसिंह के हाथ में दी, और कहा, "आप यह तस्वीर लक्ष्मी-देवी (तारा) को दिखायें, और पूछें कि तुम्हारा बाप यह है, या वह दगाबाज, जो सामने बैठा हुआ अपने को बलभद्रसिंह बताता है ?"

देवीसिंह ने बड़े गौर से उस तस्वीर को देखा। यह तस्वीर पूरी तो नहीं थी मगर फिर भी बलभद्रसिंह की सूरत से बहुतकुछ मिलती थी। भूतनाथ की बातों ने और उसके सवाल-जवाब के ढंग ने देवीसिंह के दिल पर मामूली असर पैदा नहीं किया था, बल्कि सच तो यह है कि उसने थोड़ी देर के लिए देवीसिंह की राय बदल दी थी। देवीसिंह ने सोचा कि ताज्जुब नहीं भूतनाथ बहुतकुछ सच कहता हो और बलभद्रसिंह वास्तव में असली बलभद्रसिंह न हो, क्योंकि जहाँ तक मैंने देखा है, बलभद्रसिंह के मिलने से जितना जोश कमलिनी, लाडिली और तारा के दिल में पैदा हुआ था, उतना बलभद्रसिंह के दिल में, अपनी तीनों लड़कियों को देखकर पैदा नहीं हुआ, यह एक ऐसी बात है जो मेरे दिल में शक पैदा कर सकती है, मगर उस कागज़ के मुट्ठे में जितनी चीठियाँ भूतनाथ के हाथ की लिखी कही जाती हैं वे अवश्य भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं, क्योंकि जब मैंने भूतनाथ से कहा था कि तुम्हारे अक्षर इन चीठियों के अक्षरों से मिलते हैं, तो इस बात का कोई जवाब उसने नहीं दिया, अस्तु, उन दुष्ट कर्मों का करनेवाला तो अवश्य भूतनाथ है, मगर क्या यह बलभद्रसिंह भी वास्तव

में असली बलभद्रसिंह नहीं हैं ? अजब तमाशा है, कुछ समझ में नहीं आता कि क्या निश्चय किया जाय।

इन सब बातों को सोचते हुए देवीसिंह वहाँ से रवाना हुए और डोंगी पर सवार हो मकान के अन्दर गये जहाँ तेजसिंह उस कागज के मुट्ठे को हाथ में लिये हुए, देवीसिंह के वापस आने की राह देख रहे थे।

तेज : देवीसिंह, तुमने इतनी देर क्यों लगायी ? मैं कबसे राह देख रहा हूँ कि तुम आ जाओ तो इस मुट्ठे को खोलूँ।

देवी : हाँ हाँ, आप पढ़िए, मैं भी आ गया।

तेज : मगर यह तो कहो कि तुम्हें इतनी देर क्यों लगी ?

देवी : भूतनाथ ने मुझे रोक लिया और कहा कि पहले मेरी बातें सुन लो तो यहाँ से जाओ।

बलभद्र : क्या भूतनाथ तालाब के बाहर अभी तक बैठा है ?

देवी : हाँ, अभी तक बैठा है और बैठा रहेगा।

बलभद्र : सो क्यों, क्या कहता है ?

देवी : वह कहता है कि मुझे कमलिनी ने बिना समझे व्यर्थ निकाल दिया, उन्हें चाहिए था कि नकली बलभद्रसिंह के सामने मेरा इन्साफ करतीं।

बलभद्र : नकली बलभद्रसिंह कैसा ?

देवी : वह आपको नकली बलभद्रसिंह बताता है और कहता है कि असली बलभद्रसिंह अभी तक एक जगह कैद हैं, अगर किसी को शक हो तो मुझसे सवाल-जवाब कर ले।

बलभद्र : नकली और असली होने में सबूत की जरूरत है या सवाल-जवाब करने की ?

देवी : ठीक है मगर उसने आपको बुलाया है और कहा है कि बलभद्र-सिंह मेरी एक बात आकर सुन जाँय फिर जोकुछ उनके जी में आवे करें।

बलभद्र : मारो कमबख्त को, मैं अब उसकी बातें सुनने के लिए क्यों जाने लगा ?

देवी : क्या हर्ज है अगर आप उसकी दो बातें सुन लें, कदाचित् कोई नया रहस्य ही मालूम हो जाय !

बलभद्र : नहीं, मैं उसके पास न जाऊँगा।

तेज : तो भूतनाथ को इसी जगह क्यों न बुला लिया जाय ?

कमलिनी : हाँ, मैं भी यही उचित समझती हूँ।

देवी : नहीं नहीं, इससे यह उत्तम होगा कि बलभद्रसिंह खुद उससे मिलने के लिए तालाब पर जायें।

इतना कहकर देवीसिंह ने तेजसिंह की तरफ देखा और कोई गुप्त

इशारा किया।

बलभद्र : उसका इस मकान में आना मुझे भी पसन्द नहीं ! अच्छा मैं स्वयं जाता हूँ, देखूँ वह नालायक क्या कहता है।

तेज : अच्छी बात है, आप भैरोसिंह को अपने साथ लेते जाइए।

बलभद्र : सो क्यों ?

देवी : कौन ठीक, कमबख्त चोट कर बैठे, आखिर गम और डर ने उसे पागल तो बना ही दिया है।

इतना कहकर देवीसिंह ने फिर तेजसिंह की तरफ देखा और इशारा किया, जिसे सिवाय तेजसिंह के और कोई नहीं समझ सकता था।

बलभद्र : अजी, उस कमबख्त गीदड़ की इतनी हिम्मत कहाँ जो मेरा मुकाबला करे !

तेज : ठीक है, मगर भैरोसिंह को साथ लेकर जाने में हर्ज भी क्या है ? (भैरोसिंह से) जाओजी भैरो तुम इनके साथ जाओ !

लाचार भैरोसिंह को साथ लेकर बलभद्रसिंह बाहर चला गया। इसके बाद कमलिनी ने देवीसिंह से कहा, "मुझे मालूम होता है कि आपने मेरे पिता को जबर्दस्ती भूतनाथ के पास भेजा है।"

देवी : हाँ, इसलिए कि ये थोड़ी देर के लिए अलग हो जाँय तो मैं एक अनूठी बात आप लोगों से कहूँ।

कमलिनी : (चौंककर) क्या भूतनाथ ने कोई नयी बात बतायी है ?

देवी : हाँ, भूतनाथ ने यह बात बहुत जोर देकर कही कि असली बलभद्रसिंह अभी तक क़ैद में हैं, और यदि किसी को शक हो तो मेरे साथ चले, मैं दिखला सकता हूँ। उसने बलभद्रसिंह की तस्वीर भी मुझे दी है, और कहा है कि यह तस्वीर तीनों बहिनों को दिखाओ, पहिचानें कि असली बलभद्रसिंह यह है, या वह।

लक्ष्मीदेवी ने हाथ बढ़ाया और देवीसिंह ने वह तस्वीर उसके हाथ पर रख दी।

तारा : (तस्वीर देखकर) आह ! यह तो मेरे बाप की असली तस्वीर है ! इस चेहरे में तो कोई ऐसा फर्क ही नहीं है जिससे पहिचानने में कठिनाई हो। (कमलिनी की तरफ तस्वीर बढ़ाकर) लो बहिन तुम भी देख लो, मैं समझती हूँ, यह सूरत तुम्हें भी न भूली होगी।

कमलिनी : (तस्वीर देखकर) वाह ! क्या इस सूरत को मैं अपनी जिन्दगी में कभी भूल सकती हूँ ! (देवीसिंह से) क्या भूतनाथ ने इसी सूरत को दिखाने का वादा किया है ?

देवी : हाँ, इसी को।

कमलिनी : तो क्या आपने पूछा नहीं कि अगर तुम यह हाल पहिले ही जानते थे, तो अब तक हम लोगों से क्यों न कहा ?

देवी : केवल यही नहीं, बल्कि मैंने कई बातें उससे पूछीं।

तेज : तुममें और भूतनाथ में जो-जो बातें हुईं, सब कह जाओ।

वह तस्वीर एक-एक करके सभों ने देखी और तब देवीसिंह उन बातों को दोहरा गये जो उनके और भूतनाथ के बीच में हुईं थीं। उनके सुनने से सभों को ताज्जुब हुआ और सभीकोई सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

कमलिनी : (तारा से) बहिन बेशक तुम इस विषय में हम लोगों से बहुत ज्यादे गौर कर सकती हो, फिर भी इतना मैं कह सकती हूँ कि मेरे पिता में जो भूतनाथ से मिलने गये हैं और इस तस्वीर में बहुत ज्यादे फर्क नहीं है।

तारा : क्या कहूँ अक्ल कुछ काम नहीं करती ! मैं उन्हें भी अच्छी तरह पहिचानती हूँ और इस तस्वीर को भी अच्छी तरह पहिचानती हूँ। इस तस्वीर को तो हम तीनों में से जो देखेगा, वही कहेगा कि हमारे पिता की है, मगर इनको केवल मैं ही पहिचानती हूँ। जिस जमाने में मैं और ये एक कैदखाने में थे, उसी जमाने में इनकी सूरत-शक्ल में बहुत फर्क पड़ गया था। (चौंककर) आह, मुझे एक पुरानी बात याद आयी है, जो इस भेद को तुरन्त साफ कर देगी !

कमलिनी : वह क्या ?

तारा : तुम्हें याद होगा कि जब हम लोग छोटे-छोटे थे और लाडिली बहुत ही छोटी थी तो उसे एक दफे बुखार आया था, और वह बुखार बहुत ही कड़ा था, यहाँ तक कि सरसाम हो गया था और उसी पागलपन में उसने पिताजी के मोढ़े पर दाँत काट लिया था।

कमलिनी : ठीक है, अब मुझे भी वह बात याद पड़ी। इतने जोर से दाँत काटा था कि सेरों खून निकल गया था। जब तक वे हम लोगों के साथ रहे, तब तक मैं बराबर उस निशान को देखती थी, मुझे विश्वास है कि सौ वर्ष बीत जाने पर भी वह दाग मिट नहीं सकता।

तारा : बेशक ऐसा ही था और हमने, तुमने मिलकर यह सलाह गाँठी थी कि दाँत काटने के बदले में लाडिली को खूब मारेंगे। आखिर लड़कपन का जमाना ही तो था !

कमलिनी : हाँ, और यह बात हमारी माँ को मालूम हो गयी थी और उसने हम दोनों को समझाया था।

तारा की यह बात कुछ ऐसी थी कि इसने लड़कपन के जमाने की याद

दिला दी और कमलिनी तथा लाडिली को तो इस बात में कुछ भी शक न रहा कि तारा बेशक लक्ष्मीदेवी है, मगर बलभद्रसिंह के विषय में जरूर कुछ शक हो गया और उनके विषय में दोनों ने यह निश्चय कर लिया कि बलभद्रसिंह भूतनाथ से मिलकर लौटें तो किसी बहाने से उनका मोढ़ा देखा जाय, साथ ही यह भी निश्चय कर लिया कि इसके बाद ही कोई आदमी भूतनाथ के साथ जाय और उस कैदी को भी देखे, बल्कि जिस तरह बने उसे छुड़ाकर ले आवे।

इतने ही में तालाब के बाहर से कुछ शोरगुल की आवाज आयी। तेजसिंह ने पता लगाने के लिए तारासिंह को बाहर भेजा और तारासिंह ने लौटकर खबर दी कि भूतनाथ और बलभद्रसिंह में लड़ाई बल्कि यों कहना चाहिए कि जबर्दस्त कुश्ती हो रही है।

यह सुनते ही कमलिनी, लाडिली, देवीसिंह और तेजसिंह बाहर चले गये और देखा कि वास्तव में वे दोनों लड़ रहे हैं और भैरोसिंह अलग खड़ा तमाशा देख रहा है। भूतनाथ और बलभद्रसिंह की लड़ाई तेजसिंह पहिले देख चुके थे, और उन्हें मालूम हो चुका था कि बलभद्रसिंह भूतनाथ से बहुत जबर्दस्त है, मगर इस समय जिस खूबी और बहादुरी के साथ भूतनाथ लड़ रहा था, उसे देखकर तेजसिंह को ताज्जुब मालूम हुआ, और उन्होंने तारासिंह की तरफ देखके कहा, "इस समय तो भूतनाथ बड़ी बहादुरी से लड़ रहा है। मैं समझता हूँ कि पहिले दफे जब हमने भूतनाथ की लड़ाई देखी थी, तो उस समय डर और घबराहट ने भूतनाथ की हिम्मत तोड़ दी थी, मगर इस समय क्रोध ने उसकी ताकत दूनी कर दी है, लेकिन भैरो चुपचाप खड़ा तमाशा क्यों देख रहा है!"

देवी : जो हो, पर इस समय उचित है कि पार चलके इन लोगों को अलग कर देना चाहिए, मगर अफसोस, डोंगी एक ही है जो इस समय उस पार गयी हुई है।

कमलिनी : सब्र कीजिए, मैं दूसरी डोंगी ले आती हूँ, यहाँ डोंगियों की कमी नहीं है।

इतना कहकर कमलिनी चली गयी और थोड़ी देर मे मोटे और रोगनी कपड़े की एक तोशक उठा लायी, जिसमें हवा भरने के लिए एक कोने पर सोने का पेंचदार मुँह बना हुआ था और उसी के साथ एक छोटी भाथी भी थी। तेजसिंह ने उसी भाथी से बात-की-बात में हवा भरके उसे तैयार किया और उस पर तेजसिंह और देवीसिंह बैठकर पार जा पहुँचे।

तेजसिंह और देवीसिंह को यह देखकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ कि दोनों आदमियों का खंजर और ऐयारी का बटुआ भैरोसिंह के हाथ में है और वे

दोनों बिना हर्बे के लड़ रहे हैं। तेजसिंह ने बलभद्रसिंह को और देवीसिंह ने भूतनाथ को पकड़कर अलग किया।

बलभद्र : इस नालायक कमीने को इतना पाप करने पर भी शर्म नहीं आती, चूल्लू-भर पानी में डूब नहीं मरता और मुकाबला करने के लिए तैयार होता है !

भूतनाथ : मैं कसम खाकर कहता हूँ कि यह असली बलभद्रसिंह नहीं है। वह बेचारा अभी तक कैद में है, और इसी की बदौलत कैद में है। जिसका जी चाहे मेरे साथ चले, मैं दिखाने के लिए तैयार हूँ।

बलभद्र : साथ ही इसके यह भी क्यों नहीं कह देता कि वे चीठियाँ भी तेरे हाथ की लिखी हुई नहीं हैं !

भूतनाथ : हाँ हाँ, तेरे हाथ की लिखी वे चीठियाँ भी मेरे पास मौजूद हैं, जिनकी बदौलत बेचारा बलभद्रसिंह अभी तक मुसीबत झेल रहा है।

यह कहकर भूतनाथ ने अपना ऐयारी का बटुआ लेने के लिए भैरोसिंह की तरफ हाथ बढ़ाया।

तीसरा बयान

जिस समय भूतनाथ ने बलभद्रसिंह से यह कहकर कि 'तेरे हाथ की लिखी हुई वे चीठियाँ भी मेरे पास मौजूद हैं, जिनकी बदौलत बेचारा बलभद्रसिंह अभी तक मुसीबत झेल रहा है' भैरोसिंह की तरफ ऐयारी का बटुआ लेने के लिए हाथ बढ़ाया, उस समय तेजसिंह को विश्वास हो गया कि बेशक भूतनाथ बलभद्रसिंह को दोषी ठहरावेगा, मगर भैरोसिंह के हाथ से ऐयारी का बटुआ लेने के बाद भूतनाथ ने कुछ सोचा और फिर तेजसिंह की तरफ देखकर कहा—

भूतनाथ : नहीं, इस समय मैं उन चीठियों को नहीं निकालूँगा, क्योंकि यह झट इनकार कर जायगा, और कह देगा कि मेरे हाथ की लिखी ये चीठियाँ नहीं हैं, आप लोगों को इसके हाथ की लिखावट देखने का मौका अभी तक नहीं मिला है।

बलभद्र : नहीं नहीं; मैं इनकार न करूँगा, बल्कि स्वीकार करूँगा, तू कोई चीठी निकाल भी तो सही।

भूतनाथ : हाँ हाँ, मैं चीठियाँ निकालूँगा, मगर इस थोड़ी देर में मैं इस बात को अच्छी तरह सोच चुका हूँ कि तेरे हाथ की लिखी हुई चीठियों को निकालना इस समय की अपेक्षा उस समय विशेष लाभदायक होगा, जब मैं तेजसिंह या और किसी को ले जाकर असली बलभद्रसिंह का सामना करा

दूँगा। (तेजसिंह से) कहिए आप मेरे साथ चलने के लिए तैयार हैं या किसी को साथ भेजेंगे ?

तेज : इस बात का फैसला कमलिनी या लक्ष्मीदेवी करेंगी, मैं तुमको पुनः इस मकान में चलने की आज्ञा देता हूँ, मगर साथ-साथ यह भी कह देता हूँ कि देखो भूतनाथ, तुम बड़े-बड़े जुर्म कर चुके हो और इस समय भी अपने हाथ की लिखी हुई चीठियों से इनकार नहीं करते, मगर अब मैं देखता हूँ कि तुम पुनः कोई नया पातक किया चाहते हो !

इतना कहकर तेजसिंह ने बलभद्रसिंह का हाथ पकड़ लिया और देवीसिंह तथा भैरोसिंह को यह कहकर मकान की तरफ रवाना हुए कि 'हम दोनों के जाने बाद थोड़ी देर में जब हम कहला भेजें तो भूतनाथ को लिये मकान में आना'।

बलभद्रसिंह को साथ लिये हुए तेजसिंह मकान के अन्दर आये और कमलिनी किशोरी तथा तारा इत्यादि से सब हाल कहा।

तारा : इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ झूठा, दगाबाज और परले सिरे का बेईमान साबित हो चुका है।

तेज : बेशक, ऐसा ही है, मगर इस समय हम लोगों को सबसे पहिले उसी बात का निश्चय कर लेना चाहिए, जिसके बारे में लक्ष्मीदेवी ने इशारा किया था।

कमलिनी : ठीक है। (बलभद्रसिंह की तरफ देखके) आप बहुत सुस्त और पसीने-पसोने हो रहे हैं, अतएव कपड़े उतारकर आराम कीजिए और ठण्डे होइए।

बलभद्र : हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ।

इतना कहकर बलभद्रसिंह ने कपड़े उतार डाले। उस समय लोगों का ध्यान बलभद्रसिंह के मोढ़े की तरफ गया, और सभों ने उस निशान को बहुत अच्छी तरह देखा, जिसे लक्ष्मीदेवी ने याद दिलाया था।

कमलिनी : (खुशी से बलभद्रसिंह का हाथ पकड़के और लक्ष्मीदेवी की तरफ देखके) देखो बहिन, यह पुराना निशान अभी तक मौजूद है। ऐसी अवस्था में मुझे कोई धोखा दे सकता है ? कभी नहीं।

बलभद्र : (हँसकर) इस निशान को लाडिली अच्छी तरह पहिचानती होगी, क्योंकि इसी ने बीमारी की अवस्था में दाँत काटा था ? (लम्बी साँस लेकर) अफसोस, आज और उस जमाने के बीच में जमीन-आसमान का फर्क पड़ गया है। ईश्वर तेरी महिमा कुछ कही नहीं जाती !

बलभद्रसिंह के मोढ़े का निशान देखकर कमलिनी, लाडिली और लक्ष्मीदेवी का शक जाता रहा, और इसके साथ ही साथ तेजसिंह इत्यादि

ऐयारों को भी निश्चय हो गया कि यह बेशक कमलिनी, लक्ष्मीदेवी और लाडिली का बाप है, और भूतनाथ अपनी बदमाशी और हरमजदगी से हम लोगों को धोखे में डालकर दुःख दिया चाहता है।

थोड़ी देर तक बाप-बेटियों के बीच में वैसी ही मुहब्बत-भरी बातें होती रहीं, जैसी कि बाप-बेटियों में होनी चाहिए, और बीच-ही-बीच में ऐयार लोग भी 'हाँ, नहीं, ठीक है, बेशक' इत्यादि करते रहे। इसके बाद इस विषय पर विचार होने लगा कि भूतनाथ के साथ इस समय क्या सलूक करना चाहिए। बहुत वादाविवाद होने पर यह निश्चय ठहरा कि भूतनाथ को कैद कर रोहतासगढ़ भेज देना चाहिए, जहाँ उसके किये हुए दोषों की पूरी-पूरी तहकीकात समय मिलने पर हो जायगी, हाँ, लगे हाथ उस कागज के मुट्ठे को अवश्य पढ़कर समाप्त कर देना चाहिए, जिससे भूतनाथ की बदमाशियों तथा पुरानी घटनाओं का पता लगता है—तथा इन सब बातों से छुट्टी पाकर किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली को रोहतासगढ़ में चलकर आराम के साथ रहना चाहिए।

ऊपर लिखी बातों में जो तै पा चुकी थीं, कई बातें कमलिनी की इच्छानुसार न थीं, मगर तेजसिंह की जिद से, जिन्हें सब लोग बड़ा बुजुर्ग और बुद्धिमान मानते थे, लाचार होकर उसे मानना ही पड़ा।

तेजसिंह उसी समय कमरे के बाहर चले गये और जफील बुलाकर देवीसिंह तथा भैरोसिंह का अपनी तरफ ध्यान दिलाया। जब दोनों ऐयारों ने इधर देखा तो तेजसिंह ने कुछ इशारा किया, जिससे वे दोनों समझ गये कि भूतनाथ को कैदियों की तरह बेबस करके मकान के अन्दर ले आने की आज्ञा हुई है। देवीसिंह ने यह बात भूतनाथ से कही, भूतनाथ ने कुछ सोचकर सिर झुका लिया, और तब हथकड़ी पहिनने के लिए अपने दोनों हाथ देवीसिंह की तरफ बढ़ाये। देवीसिंह ने हथकड़ी और बेड़ी से भूतनाथ को दुरुस्त किया, और इसके बाद दोनों ऐयार उसे डोंगी पर चढ़ाकर मकान के अन्दर ले आये। इस समय भूतनाथ की निगाह फिर उस कागज के मुट्ठे और पीतल की सन्दूकड़ी पर पड़ी, और पुनः उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गयी।

तेजसिंह : भूतनाथ, तुम्हारा कसूर अब हम सब लोगों को मालूम हो चुका है यद्यपि यह कागज का मुट्ठा अभी पूरा-पूरा पढ़ा नहीं गया, केवल चार-पाँच चीठियाँ ही इसमें की पढ़ी गयीं, परन्तु इतमे ही में सभों का कलेजा काँप गया है। निःसन्देह तुम बहुत कड़ी सजा पाने के अधिकारी हो, अतएव तुम्हें इस समय कैद करने का हुक्म दिया जाता है, फिर जो होगा देखा जायगा।

भूतनाथ : (कुछ सोचकर) मालूम होता है कि मेरी अर्जी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, और इस बलभद्रसिंह को सभों ने सच्चा समझ लिया है।

तेजसिंह : बेशक बलभद्रसिंह सच्चे हैं, और इस विषय में अब तुम हम लोगों को धोखा देने का उद्योग मत करो। हाँ, यदि कुछ कहना है तो इन चीठियों के बारे में कहो, जो बेशक तुम्हारे हाथ की लिखी हुई हैं, और तुम्हारे दोषों को आईने की तरह साफ खोल रही हैं।

भूतनाथ : हाँ, इन चीठियों के विषय में भी मुझे बहुत कुछ कहना है, परन्तु आप लोगों के सामने कुछ कहना उचित नहीं समझता, क्योंकि आप लोग मेरा फैसला नहीं कर सकते हैं।

तेजसिंह : सो क्यों, क्या हम लोग तुम्हें सजा नहीं दे सकते ?

भूतनाथ : यदि आप धर्म की लकीर को बेपरवाही के साथ लाँघने से कुछ भी संकोच कर सकते हैं, तो मेरा कहना सही है, क्योंकि आप लोगों के मालिक राजा बीरेन्द्रसिंह मेरे पिछले कसूरों को माफ कर चुके हैं और इधर राजा बीरेन्द्रसिंह का जो-जो काम मैं कर चुका हूँ, उस पर ध्यान देने योग्य भी वे ही हैं। इसी से मैं कहता हूँ कि बिना मालिक के कोई दूसरा मेरे मुकदमे को देख नहीं सकता।

तेजसिंह : (कुछ देर तक सोचने के बाद) तुम्हारा यह कहना सही है। खैर, जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा और राजा साहब ही तुम्हारे मामले का फैसला करेंगे, मगर मुजरिम को गिरफ्तार और कैद करना तो हम लोगों का काम है।

भूतनाथ : बेशक, कैद करके जहाँ तक जल्द हो सके मालिक के पास ले जाना जरूर आप लोगों का काम है, मगर कैद में बहुत दिनों तक रखकर किसी को कष्ट देना आपका काम नहीं है, क्योंकि कदाचित् वह निर्दोष ठहरे, जिसे आपने दोषी समझ लिया हो।

तेजसिंह : क्या तुम फिर भी अपने को बेकसूर साबित करने का उद्योग करोगे ?

भूतनाथ : बेशक, मैं बेकसूर बल्कि इनाम पाने के योग्य हूँ, परन्तु आप लोगों के सामने जिन पर अक्ल की परछाईं तक नहीं पड़ी है, मैं अब कुछ भी न कहूँगा। आप यह न समझिए कि मैं केवल इसी बुनियाद पर अपने को छुड़ा लूँगा कि महाराज ने मेरा कसूर माफ कर दिया है। नहीं, बल्कि मेरा मुकद्दमा कोई अनूठा रंग पैदा करके मेरे बदले में किसी दूसरे ही को कैदखाने की कोठरी का मेहमान बनावेगा।

तेजसिंह : खैर, मैं भी तुम्हें बहुत जल्द राजा बीरेन्द्रसिंह के सामने हाजिर करने का उद्योग करूँगा।

इतना कहकर तेजसिंह ने देवीसिंह की तरफ देखा, और देवीसिंह ने भूतनाथ को तहखाने की कोठरी में ले जाकर बन्द कर दिया।

इस काम से छुट्टी पाकर तेजसिंह ने चाहा कि किसी ऐयार के साथ भूतनाथ और भगवनिया को आज ही रोहतासगढ़ रवाना करें, और इसके बाद कागज के मुट्ठे को पुनः पढ़ना आरम्भ करें, मगर उन्हें शीघ्र ही मालूम हो गया कि कोई ऐयार तब तक भूतनाथ को लेकर रोहतासगढ़ जाना खुशी से पसन्द न करेगा जब तक भूतनाथ की जन्मपत्री पढ़ या सुन न लेगा। अस्तु, तेजसिंह की यही इच्छा हुई कि लगे हाथ सब कोई रोहतासगढ़ चले चलें, और जोकुछ हो वहाँ ही हो। अन्त में ऐसा ही हुआ, अर्थात् तेजसिंह की आज्ञा सभों को माननी पड़ी।

चौथा बयान

नानक को तो हमने इस तरह भुला दिया जैसे अमीर लोग किसी से कुछ वादा करके उसे भुला देते हैं। आज अकस्मात नानक की याद आयी है, अकस्मात काहे, बल्कि यों कहना चाहिए कि यकायक आ पड़नेवाली आवश्यकता ने नानक की याद दिला दी है।

जमानिया प्रान्त से भागे हुए स्वार्थी नानक ने वहाँ से बहुत दूर जाकर अपना डेरा बसाया और, यही सबब है कि आज मिथिलेश की अमलदारी में एक छोटे-से शहर के मामूली महल्ले में मँगनी का मकान लेकर लापरवाही के साथ दिन बिताते हुए नानक को हम देखते हैं। यह शहर यद्यपि छोटा है, मगर दो-तीन पढ़े-लिखे विद्यानुरागी रईसों और अमीरों के कारण, जिन पर यहाँ की रिआया का बहुत बड़ा प्रेम है, अँगूठी का सुडौल नगीना हो रहा है।

नानक यद्यपि कंगाल नहीं था, मगर बहुत ही खुदगर्ज और साथ-साथ कंजूस भी होने के कारण अपने को छिपाये हुए बहुत ही साधारण ढंग से रहा करता था अर्थात् उसके घर में (कुत्ते-बिल्ली को छोड़) एक नौकर एक मजदूरनी और एक उसकी जोरू के सिवाय, जिसे वह न मालूम कहाँ से उठा लाया, या ब्याह लाया था, और कोई भी नहीं रहता था। लोगों का कथन तो यही था कि नानक ने ब्याह करके अपनी गृहस्थी बसायी है, मगर कई आदमियों को, जो नानक के साथ-ही-साथ रामभोली के किस्से से भी अच्छी तरह जानकार थे, इस बात का विश्वास नहीं होता था।

नानक के लिए यह शहर नया नहीं है। जब से उसका नाम इस किस्से में आया है, उसके पहिले भी समय-समय पर कई दफे वह इस शहर में

आकर रह चुका है। अबकी दफे यद्यपि उसे इस शहर में आये बहुत दिन नहीं हुए, मगर वह इस ढंग से रह रहा है, जैसे पुराना बाशिन्दा हो। वह यह भी सोचे हुए है कि उसका गुमनाम बाप, अर्थात् भूतनाथ जिसका असल हाल थोड़े ही दिन हुए उसे मालूम हुआ है, बहुत जल्द बीरेन्द्रसिंह की बदौलत मालामाल होकर शहर में आवेगा, और उस समय हम लोग बड़ी खुशी से जिन्दगी बितावेंगे, मगर उसकी इस आशा को बड़ा भारी धक्का लगा, जैसाकि आगे चलकर मालूम होगा।

रात पहर-भर के लगभग जा चुकी है। नानक अपने मकान के अन्दर-वाले दालान को बिछावन, आसन और रोशनी के सामान से इस तरह सजा रहा है, जैसे किसी नये या बहुत ही प्यारे मेहमान की अवाई सुनकर जाहिर-दारी के शौकीन लोग सजाया करते हैं। उसकी स्त्री भी खाने-पीने के सामान की तैयारी में चारों तरफ मटकती फिरती है, और थालियों को तरह-तरह के खाने तथा कई प्रकार के मांस से सजा रही है। उसकी सूरत-शक्ल और चाल-ढाल से यह भी पता लगता है कि उसे अपने मेहमान के आने की खुशी नानक से भी ज्यादे है। खैर इस टीमटाम के बयान को तो जाने दीजिए, मुख्तसर यह है कि बात-की-बात में सब सामान दुरुस्त हो गया, और नानक की स्त्री ने अपनी लौंडी से कहा—"अरे ज़रा आगे बढ़के देख तो सही गज्जू बाबू आते हैं, या नहीं !!"

लौंडी : (धीरे से, जिसमें दूसरा कोई सुनने न पावे) बीबी जल्दी क्यों करती हो, वे तो यहाँ आने के लिए तुमसे भी ज्यादे बेचैन हो रहे होंगे।

बीबी : (मुस्कराकर धीरे से) कमबख्त—यह तू कैसे जानती है ?

लौंडी : तुम्हारी और उनकी चाल से क्या मैं नहीं जानती ? क्या उस एकादशी के रातवाली बात भूल जाऊँगी ? (अपना बाजू दिखाकर) देखो यह तुम्हारी···

लौंडी अपनी बात पूरी भी न करने पायी थी कि मटकते हुए नानक भी उसी तरफ आ पहुँचे, और लाचार होकर लौंडी को चुप रह जाना पड़ा।

नानक : (सजी हुई थालियों की तरफ देखके) अरे, इसमें मुरब्बा तो रक्खा ही नहीं !

बीबी : मुरब्बा क्या खाक रखती ! न मालूम कहाँ से सड़ा हुआ मुरब्बा उठा लाये ! वह उनके खाने लायक भी है ? लखपती आदमी की थाली में रखते शर्म तो नहीं मालूम पड़ती !

नानक : मेरा तो दो आना पैसा उसमें लग गया, और तुम्हें पसन्द ही नहीं। क्या मैं अन्धा था, जो सड़ा हुआ मुरब्बा उठा लाता !

बीबी : तुम्हारे अन्धे होने में शक ही क्या है ? ऐसे ही आँखवाले होते

तो रामभोली, अपनी माँ, और अपने बाप के पहिचानने में वर्षों तक काहे झक मारते रहते।

नानक : (चिढ़कर) तुम्हारी बातें तो तीर की तरह लगती हैं! तुम्हारे तानों ने तो कलेजा पका दिया ! रोज-रोज की किचकिच ने तो नाकों दम कर दिया ! न मालूम कहाँ की कमबख्ती आयी थी, जो तुम्हें मैं अपने घर में ले आया।

बीवी : (अपने मन में) कमबख्ती नहीं आयी थी, बल्कि तुम्हारा नसीब चमका था, जो मुझे अपने घर में लाये ! अगर मैं न आती तो ऐसे-ऐसे अमीर तुम्हारे दरवाजे पर थूकने भी नहीं आते ! (प्रकट) तुम्हारी कमबख्ती तो नहीं मेरी कमबख्ती आयी थी, जो इस घर में आयी ! जने-जने के सामने मुँह दिखाना पड़ता है। तुम्हें तो ऐसा मकान भी न जुड़ा, जिसमें मरदानी बैठक तो होती और तुम्हारे दोस्तों की खिदमत से मेरी जान छूटती। अच्छा तो तभी होता जो वही गूँगी तुम्हारे घर आती, और दिन में तीन दफे झाड़ू दिलवाती। चलो, दूर हो जाओ मेरे सामने से नहीं तो अभी भण्डा फोड़के रख दूँगी।

लौंडी : बीवी रहने भी दो, तुम तो बड़ी भोली हो, ज़रा सी बात में रंज हो जाती हो !

बड़ी मुश्किल से लौंडी ने लड़ाई बन्द करवायी और इतने ही में दरवाजे पर से किसी के पुकारने की आवाज आयी। नानक दौड़ा हुआ बाहर गया। दरवाजा खोलने पर मालूम हुआ कि पाँच-सात नौकरों के साथ गज्जू बाबू आ पहुँचे हैं। इनका असल नाम 'गजमेन्दुपाल' था, मगर अमीर होने के कारण लोग इन्हें गज्जू बाबू के नाम से पुकारा करते थे।

नौकरों को तो बाहर छोड़ा, और अकेले गज्जू बाबू आँगन में पहुँचे। नानक ने बड़ी खातिरदारी से इन्हें बैठाया, और थोड़ी देर तक गपशप के बाद खाने की सामग्री उनके आगे रक्खी गयी।

गज्जू : अरे तो मैं अकेला ही खाऊँगा ?

नानक : और क्या ?

गज्जू : नही सो तो नही होगा, तुम अपनी थाली भी लाओ, मेरे सामने बैठो।

नानक : भला खाइए तो सही, मैं आपके सामने ही तो हूँ, (बैठकर) लीजिए बैठ जाता हूँ।

गज्जू : कभी नहीं, हरगिज नहीं; मुमकिन नहीं ! ज्यादे जिद्द करोगे तो मैं उठकर चला जाऊँगा !

नानक : अच्छा आप खफा न होइए, लीजिए मैं भी अपनी थाली लाता

हूँ।

लाचार नानक को भी अपनी थाली लानी पड़ी। लौंडी ने गज्जू बाबू के सामने नानक के लिए आसन बिछा दिया, और दोनों आदमियों ने खाना शुरू किया।

गज्जू : वाह, गोश्त तो बहुत ही मजेदार बना है—जरा और मंगाना !

नानक : (लौंडी से) अरे जा जल्दी से गोश्त का बरतन उठा ला।

गज्जू : वाह वाह, क्या दाई परोसेगी ?

नानक : क्या हर्ज है ?

गज्जू : वाह, अरे हमारी भाभी साहबा कहाँ हैं ? बुलाओ साहब। जब हमारे आपके दोस्ती है तो पर्दा काहे का ?

नानक : पर्दा तो कुछ नहीं है, मगर उसे आपके सामने आते शर्म मालूम होगी।

गज्जू : व्यर्थ ! भला इसमें शर्म काहे की ? हाँ, अगर आप कुछ शरमाते हों तो बात दूसरी है !

नानक : नहीं भला आपसे शर्म काहे की ? आप-हम तो एकादल, एकजान ठहरे ! आपकी दोस्ती के लिए मैंने बेरादरी के लोगों तक की परवाह न की।

गज्जू : ठीक है, और मैंने भी अपने भाई साहब के नाक-भौं चढ़ाने का कुछ ख्याल न किया और तुम्हें साथ लेकर अजमेर और मक्के चलने के लिए तैयार हो गया।

नानक : ठीक है, (अपनी स्त्री से) अजी सुनो तो सही—जरा गोश्त का बर्तन लेकर यहाँ आओ।

गज्जू : हाँ हाँ, चली आओ, हर्ज क्या है। तुम तो हमारी भाभी ठहरीं, अगर जिद्द हो तो हमसे मुँह दिखायी ले लेना !

इतना सुनते ही छमछम करती हुई बीबी साहबा पर्दे से बाहर निकलीं और गोश्त का बर्तन बड़ी नजाकत से लिये दोनों महापुरुषों के पास आ खड़ी हुईं।

हम यहाँ पर बीबी साहबा का हुलिया लिखना उचित नहीं समझते, और सच तो यों है कि लिख भी नहीं सकते, क्योंकि उनके चेहरे का खास-खास हिस्सा नाम मात्र के घूँघट में छिपा हुआ था। खैर, जाने दीजिए, ऐसे तम्बाकू पीने के लिए छप्पर फूँकनेवाले लोगों का जिक्र जहाँ तक कम आये अच्छा है। हम तो आज नानक को ऐसी अवस्था में देखकर हैरान हैं और कमलिनी तथा तेजसिंह की भूल पर अफसोस करते हैं। यह वही नानक है, जिसे हमारे ऐयार लोग नेक और होनहार समझते थे, और अभी तक समझते

होंगे, मगर अफसोस, इस समय यदि किसी तरह कमलिनी को इस बात की खबर हो जाती कि नानक के धर्म तथा नेक चालचलन के लम्बे-चौड़े दस्तावेज को दीमक चाट गये, अब उसका विश्वास करना या उसे सच्चा ऐयार समझना अपनी जान के साथ दुश्मनी करना है, तो बहुत अच्छा होता। यद्यपि किशोरी, कामिनी, लाडिली, लक्ष्मीदेवी और बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का दिल भूतनाथ से फिर गया है, मगर नानक पर कदाचित् अभी तक उनकी दयादृष्टि बनी हुई है।

नानक की स्त्री ने बर्तन में से दो टुकड़ा गोश्त निकालकर गज्जू बाबू की थाली में रक्खा और पुनः निकालकर थाली में रखने के लिए झुकी ही थी कि बाहर से किसी आदमी ने बड़े जोर से पुकारा, "अजी नानक हो जी !" इस आवाज को सुनते ही नानक चौंक गया और उसने दाई की तरफ देखके कहा, "जल्दी जा, देख तो सही कौन पुकार रहा है !"

दाई दौड़ी हुई दरवाजे पर गयी। दरवाजा खोलकर जब उसने बाहर की तरफ देखा तो एक नकाबपोश पर उसकी निगाह पड़ी, जिसने चेहरे की तरह अपने तमाम बदन को भी काले कपड़े से ढँक रक्खा था। उसके तमाम कपड़े इतने ढीले थे कि उसके अंग-प्रत्यंग का पता लगाना या इतना भी जान लेना कि यह बुड्ढा है या जवान बड़ा ही कठिन था।

दाई उसे देखकर डरी। यदि गज्जू बाबू के कई सिपाही उसी जगह दरवाजे पर मौजूद न होते, तो वह निःसन्देह चिल्लाकर मकान के अन्दर भाग जाती, मगर गज्जू बाबू के नौकरों पर निगाह पड़ने से उसे कुछ साहस हुआ और उसने नकाबपोश से पूछा—

दाई : तुम कौन हो, और क्या चाहते हो ?

नकाबपोश : मैं आदमी हूँ, और नानक परसाद से मिला चाहता हूँ।

दाई : अच्छा तुम बाहर बैठो, वह भोजन कर रहे हैं, जब हाथ-मुँह धो लेंगे तब आवेंगे।

नकाबपोश : ऐसा नहीं हो सकता ! तू जाकर कह दे कि भोजन छोड़-कर जल्दी से मेरे पास आवें। जा, देर मत कर। यदि थाली की चीजें बहुत स्वादिष्ट लगती हों, और जूठा छोड़ने की इच्छा न होती हो तो कह दीजियो कि 'रोहतासमठ का पुजारी' आया है।

यह बात नकाबपोश ने इस ढंग से कही कि दाई ठहरने या पुनः कुछ पूछने का साहस न कर सकी। किवाड़ बन्द करके दौड़ती हुई नानक के पास गयी और सब हाल कहा। 'रोहतासमठ का पुजारी' आया है, इस शब्द ने नानक को बेचैन कर दिया। उसके हाथ में इतनी भी ताकत न रही कि गोश्त के टुकड़े को उठाकर उसके मुँह तक पहुँचा देता। लाचार उसने

घबड़ाई हुई आवाज में गज्जू बाबू से कहा—"आधे घण्टे के लिए मुझे माफ कीजिए। उस आदमी से बातचीत करना कितना आवश्यक है, सो आप इसी से समझ सकते हैं कि घर में आप ऐसा दोस्त और सामने से भरी थाली छोड़कर जाता हूँ। आपकी भाभी साहिबा आपको खुले दिल से खिलावेंगी। (अपनी स्त्री से) दो-चार गिलास आसव का भी इन्हें देना।"

इतना कहकर अपनी बात का बिना कुछ जवाब सुने ही नानक उठ खड़ा हुआ। अपने हाथ से गगरी उँडेल हाथ-मुँह धो दरवाजे पर पहुँचा और किवाड़ खोलकर बाहर चला गया। यद्यपि इस समय नानक ने तकल्लुफ की टाँग तोड़ डाली थी, तथापि उसके चले जाने से गज्जू बाबू को किसी तरह का रंज न हुआ, बल्कि एक तरह की खुशी हुई और उन्होंने अपने दिल में कहा, "चलो इनसे भी छुट्टी मिली।"

दरवाजे के बाहर पहुँचकर नानक ने उस नकाबपोश को देखा और बिना कुछ कहे उसका हाथ पकड़के मकान से कुछ दूर ले गया। जब ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ उन दोनों की बातें सुननेवाला कोई दिखायी नहीं देता था तब नानक ने बातचीत आरम्भ की।

नानक : मैं तो आवाज ही से पहिचान गया था कि मेरे दोस्त आ पहुँचे, मगर लौंडी को इसलिए दरवाजे पर भेजा था कि मालूम हो जाय कि आप किस ढंग से आये हैं और किस प्रकार की खबर लाये हैं। जब लौंडी ने आपकी तरफ से 'रोहतासमठ के पुजारी' का परिचय दिया, बस कलेजा दहल उठा, मालूम हो गया कि खबर भयानक है।

नकाबपोश : बेशक ऐसी ही बात है। कदाचित् तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होगा कि तुम्हारा बहुत दिनों से खोया हुआ बाप अर्थात् भूतनाथ अब मैदान की ताजी हवा खाने योग्य नहीं रहा।

नानक : हैं, सो क्यों ?

नकाबपोश : उसका दुर्दैव जो बहुत दिनों तक पारे में चाँदी की तरह छिपा हुआ था, एकदम प्रकट हो गया। उसने तुम्हारी माँ को भी अष्टम चन्द्रमा की तरह कृपा-दृष्टि से देख लिया और साढ़ेसाती के कठिन शनि को भी तुमसे जै गोपाल करने के लिए कहला भेजा है, पर इससे यह न समझना कि ज्योतिषियों के बताये हुए दान का फल बनकर मैं तुम्हारी रक्षा के लिए आया हूँ। अब तुम्हें भी यह उचित है कि आजकल के ज्योतिषियों के कर्म-भण्डार से फलित विद्या की तरह जहाँ तक जल्द हो सके, अन्तर्ध्यान हो जाओ।

नानक : (डरकर) अफसोस, तुम्हारी पुरानी आदत किसी तरह कम नहीं होती। दो शब्दों में पूरी हो जानेवाली बात को भी बिना हजार शब्दों

का लपेट दिये तुम नहीं रहते। साफ क्यों नहीं कहते कि क्या हुआ ?

नकाबपोश : अफसोस, अभी तक तुम्हारी बुद्धि की कतरनी को चाटने के लिए शान का पत्थर नहीं मिला। अच्छा तब मैं साफ-साफ ही कहता हूँ सुनो। तुम्हारे बाप का छिपा हुआ दोष बरसात की बदली में छिपे हुए चन्द्रमा की तरह यकायक प्रकट हो गया, इसी से तुम्हारी माँ भी दुश्मन के काबू में शेर के पंजे में बेचारी हिरनी की तरह पड़ गयी और उसी कारण से तुम पर भी उल्लू के पीछे शिकारी बाज की तरह धावा हुआ ही चाहता है। सम्भव है कि चारपाई के खटमल की तरह जब तक कोई ढूँढ़ने के लिए तैयार हो, तुम गायब हो जाओ, मगर मेरी समझ में फिर भी गरम पानी का डर बना ही रहेगा।

नानक : (चिढ़कर) आखिर तुम न मानोगे ! खैर, मैं समझ गया कि मेरे बाप का कसूर बीरेन्द्रसिंह को मालूम हो गया। परन्तु उनके तेजसिंह के और कमलिनी के मुँह से निकले हुए 'क्षमा' शब्द पर मुझे बहुत कुछ भरोसा था यद्यपि दोष जान लेने के पहिले ही उन्होंने ऐसा किया था।

नकाबपोश : नहीं नहीं, तुम्हारे बाप ने बीरेन्द्रसिंह का जोकुछ कसूर किया था वह तो उनके ऐयारों को पहिले ही मालूम हो गया था, मगर इन नये प्रकट भये हुए दोषों के सामने, वे दोष ऐसे थे, जैसे सूर्य के सामने दीपक, चन्द्रमा के सामने जुगनू, दिन के आगे रात, या मेरे मुकाबले में तुम !

नानक : अगर तुममें यह ऐब न होता तो तुम बड़े काम के आदमी थे। देख रहे हो कि हम लोग सड़क पर बेमौके खड़े हैं, मगर फिर भी संक्षेप में बात पूरी नहीं करते !

नकाबपोश : इसका सबब यही है कि मेरा नाम संक्षेप में या अकेले नहीं है, गोपी और कृष्ण इन दोनों शब्दों से मेरा नाम बड़े लोगों ने ठोंक मारा है, अस्तु बड़े लोगों की इज्जत का ध्यान करके मैं अपने नाम को स्वार्थ की पदवी देने के लिए सदैव उद्योग करता रहता हूँ। इसी से गोपियों के प्रेम की तरह मेरी बातों का तौल नहीं होता और जिस तरह कृष्णजी त्रिभंगी थे, उसी तरह मेरे मुख से निकले हुए शब्द भी त्रिभंगी होते हैं। हाँ, यह तुमने ठीक कहा कि सड़क पर खड़े रहना भले मनुष्यों का काम नहीं है। अस्तु, थोड़ी दूर आगे बढ़ चलो और नदी के किनारे बैठकर मेरी बात इस तरह ध्यान देकर सुनो, जैसे बीमार लोग वैद्य के मुँह से अपनी दवा का अनुपान सुनते हैं। बस जल्द बढ़ो देर न करो, क्योंकि समय बहुत कम है, कहीं ऐसा न हो कि विलम्ब हो जाने के कारण बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग आ पहुँचें और उस चरणानुरागी पात्र की मजबूती का इलजाम तुम्हारे माथे ठोंकें, जिसके कारण जंगली काँटों और कंकड़ियों से बचकर यहाँ तक

वे लोग पहुँचेंगे।

नानक : (झुँझलाकर) बस माफ कीजिए, बाज़ आये आपकी बातें सुनने से। जिस सबब से हम पर आफत आने वाली है, उसका पता हम आप लगा लेंगे, मगर द्रौपदी के चीर की तरह समाप्त न होनेवाली तुम्हारी बातें न सुनेंगे।

नकाबपोश : (हँसकर) शाबाश-शाबाश, जीते रहो, अब मैं तुमसे खुश हो गया क्योंकि अब तुम भी अपनी बातों में उपमालंकार की टाँग तोड़ने लगे। सच तो यों है कि तुम्हारा झुँझलाना मुझे उतना ही अच्छा लगता है, जितना इस समय भूख की अवस्था में फजली आम और अधावट दूध से भरा हुआ चौसेरा कटोरा मुझे अच्छा लगता।

नानक : तो साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि हम भूखे हैं, जब तक पेट-भरके खा न लेंगे तब तक असल मतलब न कहेंगे।

नकाबपोश : शाबाश, खूब समझे। बेशक, मैंने यही सोचा था कि तुम्हारे यहाँ दक्षिण के सहित भोजन करूँगा, और उन बातों का रत्ती-रत्ती भेद बता दूँगा, जिनकी बदौलत तुम कुम्भीपाक में पड़ने से भी ज्यादा दुःख भोगा चाहते हो, मगर नहीं, दरवाजे पर पहुँचते ही देखता हूँ कि फोड़ा फूट गया और सड़ा मवाद बह निकला है। अब तुम इस लायक न रहे कि तुम्हारा छुआ पानी भी पीया जाय। खैर, तुम्हारे दोस्त हैं, जिस काम के लिए आये हैं, उसे अवश्य ही पूरा करेंगे। (कुछ सोचकर) कभी नहीं, छिः छिः, तुझ नालायक से अब हम दोस्ती रखना नहीं चाहते, जो कुछ ऊपर कह चुके हैं, उसी से जहाँ तक अपना मतलब निकाल सको निकाल लो और जोकुछ करते बने, करो, हम जाते हैं!

इतना कहकर नकाबपोश वहाँ से रवाना हो गया। नानक ने उसे बहुत समझाया और रोकना चाहा, मगर उसने एक न सुनी और सीधे नदी के किनारे का रास्ता लिया तथा नानक भी अपनी बदकिस्मती पर रोता हुआ घर पहुँचा। उस समय मालूम हुआ कि उसके नौजवान अमीर दोस्त को अच्छी तरह अपनी नायाब ज्याफत का आनन्द लेकर गये हुए आधी घड़ी के लगभग हो चुके हैं।

पाँचवाँ बयान

सन्तति के छठवें भाग के पाँचवें बयान में हम लिख आये हैं कि कमलिनी ने जब कमला को मायारानी की कैद से छुड़ाया, तो उसे ताकीद कर दी कि तू सीधे रोहतासगढ़ चली जा और किशोरी की खोज में इधर-उधर घूमना

छोड़के बराबर उसी किले में बैठी रह। कमला ने यह बात स्वीकार कर ली और बीरेन्द्रसिंह के चुनारगढ़ चले जाने बाद भी कमला ने रोहतासगढ़ को नहीं छोड़ा, ईश्वर पर भरोसा करके उसी किले में बैठी रही।

यद्यपि उस किले का जनाना हिस्सा बिल्कुल सूना हो गया था, मगर जब से कमला ने उसमें अपना डेरा जमाया, तब से बीस-पचीस औरतें, जो कमला की खातिर के लिए राजा बीरेन्द्रसिंह की आज्ञानुसार लौंडियों के तौर पर रख दी गयी थीं, वहाँ दिखायी देने लगी थीं। जब राजा बीरेन्द्रसिंह यहाँ से चुनारगढ़ की तरफ रवाना होने लगे, तब उन्होंने भी कमला को ताकीद कर दी कि तू अपनी ऐयारी को काम में लाने के लिए इधर-उधर दौड़ना छोड़के बराबर इसी किले में बैठी रहियो और यदि चारों तरफ की खबर लिये बिना तेरा जी न माने तो हमारे जासूसों को जो ज्योतिषीजी के मातहत में हैं, जहाँ जी चाहे भेजा कीजियो। इसी तरह ज्योतिषीजी को भी ताकीद कर दी थी कि कमला की खातिरदारी में किसी तरह की कमी न होने पावे, तथा यह जिस समय, जो कुछ चाहे, उसका इन्तजाम कर दिया करना और इसमें भी कोई शक नहीं कि पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी ने कमला की बड़ी खातिर की। कमला बड़े आराम से यहाँ रहने लगी और जासूसों के जरिये से जहाँ तक हो सकता था, चारों तरफ की खबर भी लेती रही।

आज बहुत दिनों बाद कमला के चेहरे पर हँसी दिखायी दे रही है। आज वह बहुत खुश है, बल्कि यों कहना चाहिए कि आज उसकी खुशी का अन्दाजा करना बहुत ही कठिन है, क्योंकि पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी ने तेजसिंह के हाथ की लिखी चीठी कमला के हाथ में दी और जब कमला ने उसे खोलकर पढ़ा तो यह लिखा हुआ पाया—

"मेरे प्यारे दोस्त ज्योतिषीजी,

आज हम लोगों के लिए बड़ी खुशी का दिन है, इसलिए कि हम ऐयार लोग किशोरी, कामिनी, कमलिनी, लाडिली और तारा को एक साथ लिये हुए रोहतासगढ़ की तरफ आ रहे हैं। अस्तु, जहाँ तक हो सके पालकियों और सवारियों के अतिरिक्त कुछ फौजी सवारों को भी साथ लेकर तुम स्वयं 'डहना' पहाड़ी के नीचे हम लोगों से मिलो।

तुम्हारा दोस्त—
तेजसिंह।"

इस चीठी के पढ़ते ही कमला हद्द से ज्यादे खुश हो गयी और उसकी आँखों से गर्म-गर्म आँसुओं की बूँदें गिरने लगीं, गला भर आया और कुछ देर तक बोलने या कुछ पूछने की सामर्थ्य न रही। इसके बाद अपने को सम्हालके उसने कहा—

कमला : यह चीठी आपको कब मिली ? आप अभी तक गये क्यों नहीं ?

ज्योतिषी : यह चीठी अभी मुझे मिली है, मैं तेजसिंह के लिखे बमूजिब इन्तजाम करने का हुक्म देकर तुम्हारे पास खबर करने के लिए आया हूँ और अभी चला जाऊँगा।

कमला : आपने बहुत अच्छा किया, मैं भी उनसे मिलने के लिए ऐसे समय अवश्य चलूँगी, मगर मेरे लिए भी पालकी का बन्दोबस्त कर दीजिए, क्योंकि ऐसे समय में दूसरे ढंग पर वहाँ जाने से मालिक की इज्जत में बट्टा लगेगा।

ज्योतिषी : बेशक, ऐसा ही है, मैं पहिले ही से सोच चुका था कि तुम हमारे साथ चले बिना न रहोगी, इसलिए तुम्हारे वास्ते भी इन्तजाम कर चुका हूँ, पालकी ड्योढ़ी पर आ चुकी होगी, बस तैयार हो जाओ देर मत करो।

कमला झटपट तैयार हो गयी और ज्योतिषीजी ने भी तेजसिंह के लिखे बमूजिब सब तैयारी बात-की-बात में कर ली। घण्टे ही भर बाद रोहतासगढ़ पहाड़ के नीचे पाँच-सौ सवार चाँदी-सोने के काम की पालकियों को बीच में लिये हुए 'डहना' पहाड़ी की तरफ जाते हुए दिखायी दिये और पहर-भर के बाद वहाँ जा पहुँचे, जहाँ तेजसिंह, किशोरी इत्यादि को एक गुफा के अन्दर बैठाकर ऐयारों तथा बलभद्रसिंह को साथ लिये ज्योतिषीजी का इन्तजार कर रहे थे। तेजसिंह तथा ऐयार लोग खुशी-खुशी ज्योतिषीजी से मिले। कमला की पालकी उस गुफा के पास पहुँचायी गयी, जिसमें किशोरी और कमलिनी इत्यादि थीं और कहार सब वहाँ से अलग कर दिये गये।

वह गुफा, जिसमें कमलिनी और किशोरी इत्यादि थीं, ऐसी तंग न थी कि उनको किसी तरह की तकलीफ होती, बल्कि वह एक आड़ की जगह में और बहुत ही लम्बी-चौड़ी थी और उसमें चाँदना भी बखूबी पहुँचता था। तारासिंह की जुबानी जब किशोरी ने यह सुना कि कमला भी आयी है, तो उससे मिलने के लिए बेचैन हो गयी और जब तक वह पालकी के अन्दर से निकले, तब तक किशोरी स्वयं खोह के बाहर निकल आयी। कमला ने किशोरी को देखा तो बड़े जोश और मुहब्बत से लपकके किशोरी के गले से लिपट गयी और किशोरी ने भी बड़े प्रेम से उसे दबा लिया तथा दोनों की आँखों से आँसुओं की बूँदें टपाटप गिरने लगीं। कमलिनी ने दोनों को अलग किया और कमला को अपने गले से लगा लिया, इसके बाद कामिनी, लाडिली और तारा भी बारी-बारी कमला से मिलीं। उस समय सभों के चेहरे खुशी से दमक रहे थे और सभों के दिल की कली खिली जाती थी।

किशोरी, कामिनी, तारा और लाडिली को मालूम हो चुका था कि कमला भूतनाथ की लड़की है और वे सब भूतनाथ से बहुत रंज थीं, मगर कमला की तरफ से किसी का दिल मैला न था, बल्कि कमला को देखने के साथ ही उन पाँचों के दिल में ऐसी मुहब्बत पैदा हो गयी, जैसी सच्चे प्रेमियों के दिल में हुआ करती है। मगर अफसोस कि अभी तक कमला को इस बात की खबर नहीं हुई कि भूतनाथ उसका बाप है, और उसने बड़े-बड़े कसूर किये हैं।

किशोरी, कमलिनी और कमला इत्यादि की मुहब्बत-भरी बातचीत कदापि पूरी न होती, यदि तेजसिंह वहाँ पहुँचकर यह न कहते कि 'अब तुम लोगों को यहाँ से बहुत जल्द चल देना चाहिए, जिससे सूर्यास्त के पहिले ही रोहतासगढ़ पहुँच जाँय'। पालकियाँ गुफा के आगे रक्खी गयीं, कमलिनी, किशोरी, कामिनी, कमला, लाडिली और तारा उन पर सवार हुईं। कहारों को आकर पालकी उठाने का हुक्म दिया गया और खुशी-खुशी सबकोई रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए।

सूर्य अस्त होने के पहिले ही सवारी रोहतासगढ़ किले के अन्दर दाखिल हो गयी। किले का जनाना भाग आज फिर रौनक हो गया, मगर जनाने महल में पैर रखते ही एक दफे किशोरी का कलेजा दहल उठा, क्योंकि इस समय उसने पुनः अपने को उसी मकान में पाया, जिसमें कुछ दिन पहिले बेबसी की अवस्था में रहकर तरह-तरह की तकलीफें उठा चुकी थी और इसके साथ-ही-साथ उसको लाली और कुन्दन की वे बातें याद आ गयीं। केवल किशोरी ही को नहीं, बल्कि लाडिली को भी वह जमाना याद आ गया, क्योंकि यही लाडिली लाली बनकर उन दिनों इस महल में रहती थी, जिन दिनों किशोरी यहाँ मुसीबत के दिन काट रही थी। लाडिली तो किशोरी को पहिचानती थी, मगर किशोरी को इस बात का गुमान भी न था कि वह लाली वास्तव में यही लाडिली थी, जो आज हमारे महल में दाखिल है।

महल में पैर रखने के साथ ही किशोरी को वे पुरानी बातें याद आ गयीं, और इस सबब से उसके खूबसूरत चेहरे पर थोड़ी देर के लिए उदासी छा गयी, साथ ही पुरानी बातें याद आ जाने के कारण लाडिली की निगाह भी किशोरी के चेहरे पर जा पड़ी। वह उसकी अवस्था को देखकर समझ गयी कि इस समय इसे पुरानी बातें याद आ गयी हैं। उन्हीं बातों को खुद भी याद करके इस समय अपने को, और किशोरी को, मालिक की तरह या दूसरे ढंग से इस मकान में आये देखके, और किशोरी के चेहरे पर ध्यान पड़ने से लाडिली को हँसी आ गयी। उसने चाहा कि हँसी रोके, परन्तु रोक

न सकी और खिलखिलाकर हँस पड़ी, जिससे किशोरी को ताज्जुब हुआ और उसने लाडिली से पूछा—

किशोरी : क्यों, तुम्हें हँसी किस बात पर आयी ?

लाडिली : यों ही हँसी आ गयी।

किशोरी : ऐसा नहीं है, इसमें जरूर कोई भेद है, क्योंकि कई दिनों से हमारा-तुम्हारा साथ है पर इस बीच में व्यर्थ हँसते हुए हमने तुम्हें कभी नहीं देखा। बताओ तो सही क्या बात है ?

लाडिली : तुम्हे विचित्र ढंग से घबड़ाए हुए चारों तरफ देखते-देख मुझे हँसी आ गयी।

किशोरी : केवल यही बात नहीं है, जरूर कोई दूसरा सबब भी इसके साथ है।

कमलिनी : मैं समझ गयी ! बहन, मुझसे पूछो, मैं बताऊँगी ! बेशक लाडिली के हँसने का दूसरा सबब है, जिसे वह शर्म के मारे नहीं कहा चाहती।

किशोरी : (कमलिनी की कलाई पकड़कर) अच्छा बहिन, तुम ही बताओ कि इसका क्या सबब है ?

कमलिनी : इसके हँसने का सबब यही है कि जिन दिनों तुम इस मकान में बेबसी और मुसीबत के दिन काट रही थीं, उन दिनों यह लाडिली भी यहाँ रहती थी, और इससे तुमसे बहुत मेल-मिलाप था।

किशोरी : (ताज्जुब से) तुम भी हँसी करती हो ! क्या मैं ऐसी बेवकूफ हूँ, जो महीनों तक इस महल में लाडिली मेरे साथ रहे, और मैं उसे पहिचान न सकूँ।

कमलिनी : (हँसकर) यह तो मैं नहीं न कहती कि उन दिनों इस महल में लाडिली अपनी असली सूरत में थी ! मेरा मतलब लाली से है, वास्तव में यह लाडिली उन दिनों लाली बनकर यहाँ रहती थी।

किशोरी : (ताज्जुब से घबराकर और लाडिली का हाथ पकड़कर) हैं—क्या वास्तव में लाली तुम ही थीं !

लाडिली : इसके जवाब में 'हाँ' कहते मुझे शर्म मालूम होती है। अफसोस उन दिनों मेरी नीयत आज की तरह साफ न थी, क्योंकि मैं दुष्टा मायारानी के आधीन थी। उसे मैं अपनी बड़ी बहिन समझती थी, और उसी की आज्ञानुसार एक काम के लिए यहाँ आयी थी।

किशोरी : ओफ ओह ! तब तो आज बड़े-बड़े भेदों का पता लगेगा, जिन्हें याद करके मेरा जी बेचैन हो जाता था, और इस सबब से मैं और भी परेशान थी कि उन भेदों का असल मतलब कुछ मालूम न होता था, अब तो

म बहुत-कुछ तुमसे पूछूँगी, और तुम्हें बताना पड़ेगा।

कमलिनी : हाँ हाँ, तुम्हें सब-कुछ मालूम हो जायगा, मगर घबराती क्यों हो, इस समय हम लोगों को केवल यही काम है कि ईश्वर को धन्यवाद दें, जिसकी कृपा से हम लोग हजारों दुःख उठाकर ऐसी जगह आ पहुँचे हैं, जहाँ हमारे दुश्मन रहते थे और जिसे अब हम अपना घर समझते हैं।

लाडिली : (किशोरी से) बेशक ऐसा ही है, केवल एक यही बात नहीं और भी कई अद्भुत बातें तुम्हें मालूम होंगी। जरा सब्र करो, सफर की हरारत मिटाओ और आराम करो, जल्दी क्यों करती हो !

छठवाँ बयान

रात का समय है और चाँदनी छिटकी हुई है। आसमान पर कहीं-कहीं छोटे बादलों के टुकड़े दौड़ते हुए दिखायी दे रहे हैं, जिनमें कभी-कभी चन्द्रमा छिपता, और फिर तेजी के साथ निकल आता है। इस समय रोहतासगढ़ किले के चारों तरफ की मनभावन छटा बहुत ही भली मालूम पड़ती है। महल की छत पर किशोरी, कामिनी, कमलिनी, लाडिली, लक्ष्मीदेवी और कमला टहलती हुई चारों तरफ की कैफियत देख रही हैं। इस समय की शोभा, छटा या प्राकृतिक अवस्था, जोकुछ भी कहें; उन सभों के दिल पर जुदे ढंग का असर कर रही है। कमलिनी अपने ध्यान में डूबी हुई है, लक्ष्मी-देवी कुछ और ही सोच रही है, लाडिली किसी दूसरे ही सम्भव-असम्भव के विचार में पड़ी है, किशोरी और कामिनी अलग ही मन के लड्डू बना रही हैं। मगर कमला के दिल का कोई ठिकाना नहीं। उसने जब से यह सुन लिया है कि 'भूतनाथ गिरफ्तार करके रोहतासगढ़ के कैदखाने में डाल दिया गया' तब से वह तरह-तरह की बातें सोच रही है। भूतनाथ वास्तव में कौन है ? उसने क्या कसूर किया ? बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग उससे खुश थे—फिर यकायक रंज क्यों हो गये ? और यह तारा कभी-कभी लक्ष्मीदेवी के नाम से क्यों पुकारी जाती है ? कमलिनी तारा का अदब क्यों करने लग गयी ? इत्यादि बातों को जानने के लिए, उसका जी बेचैन हो रहा है, मगर अभी तक किसी ने इन बातों का जिक्र उससे न किया है। हाँ, इस समय इन्हीं विषयों पर बात करने का वादा है। अस्तु, कमला इसी बात का मौका ढूँढ़ रही है कि ये सब एक ठिकाने बैठ जाँय, तो बातों का सिलसिला छेड़ा जाय।

घण्टे-भर तक टहल-टहलकर चारों तरफ देखने बाद सब-की-सब एक ठिकाने फर्श पर बैठ गयीं, और कमला ने बातचीत करना आरम्भ कर

दिया।

कमला : (किशोरी से) क्यों बहिन—भूतनाथ तो राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के साथ मिल-जुलकर काम करता था, और सब कोई उससे खुश थे फिर यकायक यह हो क्या गया कि उसे कैदखाने की गर्म हवा खानी पड़ी ?

किशोरी : इसका हाल कमलिनी बहिन से पूछो।

कामिनी : क्योंकि वह इन्हीं का ऐयार था, और इन्हीं की आज्ञानुसार काम करता था।

कमलिनी : (हँसकर) किसी का ऐयार था या किसी का बाप था, इससे क्या मतलब ? जो था सो था—अब न कोई उसे अपना ऐयार बनाना पसन्द करेगा, और न कोई अपना बाप कहना स्वीकार करेगा।

किशोरी : (मुस्कुराकर) जिस तरह अब तुम मायारानी को अपनी बहिन कहना उचित नहीं समझतीं।

कमलिनी : नहीं नहीं, इस तरह और उस तरह में बड़ा फर्क है। कमबख्त मायारानी तो वास्तव में हमारी बहिन है ही नहीं !

कमला : (ताज्जुब से) मायारानी तुम्हारी बहिन नहीं है ! फिर तुमने मुझसे क्यों कहा था कि 'मायारानी हमारी बड़ी बहिन है'।

कमलिनी : तब तक मैं उसका असल हाल नहीं जानती थी, उसी तरह जिस तरह तुम भूतनाथ का असल हाल नहीं जानतीं और जब जान जाओगी तो न मालूम तुम्हारे दिल का क्या हाल होगा। खैर, वह सब जोकुछ हो, लेकिन भूतनाथ का सच्चा-सच्चा हाल कभी-न-कभी तुम्हें मालम हो ही जायगा। मगर देखो बहिन, दुनिया में कोई किसी के दोष का भागी नहीं हो सकता। जिस तरह ईमानदार बाप बदनीयत लड़के के दोष से दोषी नहीं हो सकता, उसी तरह धर्मात्मा लड़का अपने कपटी, कुटिल तथा कुचाली बाप के कामों का उत्तरदाता नहीं हो सकता है। हर एक आदमी अपने किये का फल आप ही भोगेगा, उसके बदले में उसका कोई नातेदार या मित्र दण्ड नहीं पा सकता, पर हाँ, बचाव में मदद जरूर कर सकता है, इसी के साथ-ही-साथ यह भी बँधी हुई बात है कि अच्छे और बुरे का साथ बहुत दिनों तक निबह नहीं सकता, चाहे वह आपुस में दोस्त हों या भाई हों या बाप-बेटे हों, क्योंकि दोनों की प्रकृति में भेद रहता है, और जब तक दोनों की प्रकृति एक या कुछ-कुछ मिलती-जुलती न हो प्रेम नहीं हो सकता।

कमला : क्षमा करना, क्योंकि मैं बीच ही में टोकती हूँ, तब लोग ऐसा क्यों कहते है कि 'बुरे की सोहबत करने से अच्छा आदमी भी बुरा हो जाता है' ?

कमलिनी : ठीक है, जहाँ तक मैं समझती हूँ, किसी एक बुरे आदमी की

सोहबत में कोई एक भला आदमी बुरा नहीं हो सकता, बल्कि एक बुरा आदमी किसी एक भले आदमी के साथ से कुछ सुधर सकता है—क्योंकि मन एक ऐसा शुद्ध पदार्थ है कि यदि वह किसी तरह के दबाव में न पड़ जाय, या किसी तरह की जरूरियात उसे मजबूर न करें, तो वह बराबर सचाई ही की तरफ ढुलकता रहता है—हाँ, यदि कोई एक अच्छे चालचलन का आदमी चार-पाँच या दस-बीस बदमाशों की सोहबत में बैठे तो निःसन्देह वह कुचाली हो ही जायगा, क्योंकि बहुत से नापाक दिल मिल-जुलकर, उस पाकदिल पर जबर्दस्त हो जायेंगे—और सच तो यों है कि सोहबत एक आदमी के संग को नहीं कहते, बल्कि कई आदमियों के झुण्ड में मिलकर बैठने का नाम सोहबत है। हाँ, तो मैं क्या कह रही थी, जब तुमने टोका था—बिल्कुल ही भूल गयी। इसीसे कहते हैं कि बातों के सिलसिले में टोकना अच्छा नहीं होता।

कमला : ठीक है, तभी तो मैंने पहिले ही क्षमा माँग ली थी। खैर, जाने भी दो मैं तुम्हारी बातों का मतलब पा गयी कि तुम भूतनाथ को मेरा नातेदार बनाया चाहती हो।

कमलिनी : मैं क्यों बनाया चाहती हूँ, ईश्वर ही ने तुम्हारा नातेदार बनाया है, खैर, मैं सबके पहिले तुमसे नानक का हाल कहती हूँ। नानक ने अपना हाल स्वयं ही तेजसिंह से कहा था, और मैं उस समय छिपकर सुन रही थी, इसके बाद और लोगों को भी वह हाल मालूम हुआ।

कमलिनी ने पिछला बहुत-सा हाल जो गुजर चुका था, वह कह सुनाया और तब तेजसिंह का पागल बनके मायारानी के बाग में जाना, वहाँ की कैफियत, नानक का हाल, चण्डूल की दिल्लगी* भूतनाथ और शेरसिंह का रंग-ढंग तथा बाकी का सब हाल भी कहा, जिसे बड़े गौर और आश्चर्य से सब सुनती रहीं। इस समय कमला के दिल की अजब हालत थी, उसकी आँखों के सामने उसके लड़कपन का जमाना घूम रहा था। वह उस समय की बातों को अच्छी तरह याद कर-करके सोच रही थी, जब उसकी माँ जीती थी, और उसका बाप बहुत दिनों तक गैरहाजिर रहा करता था। अन्त में उसका बाप यकायक गायब हो गया था और किसी अनजान आदमी ने उसके मरने की खबर कमला के नाना को पहुँचायी थी। उन दिनों कमला के बाप के बारे में तरह-तरह की खबरें उड़ रही थीं। आखिर जब कमला का चाचा शेरसिंह कमला के घर गया और उसने स्वयं कहा कि 'बेशक कमला का बाप मेरे सामने मरा और मैं ही ने उसकी दाहक्रिया की

---

* पाठकों को मालूम होगा कि कमलिनी ही चण्डूल बनी हुई थी।

है' तब सभों को उसके मरने का विश्वास हुआ था।

कमला : हाँ, तो इस किस्से से साबित होता है, बल्कि मेरा दिल गवाही देता है कि भूतनाथ मेरा रिश्तेदार है।

कमलिनी : बेशक, ऐसा ही है।

कमला : तो साफ-साफ जल्दी क्यों नहीं कह देतीं कि वह मेरा कौन है? यद्यपि मैं समझ गयी हूँ, तथापि अपने मुँह से कुछ कह नहीं सकती।

कमलिनी : अच्छा तो मैं कहे देती हूँ कि वह तुम्हारा बाप है और नानक तुम्हारा भाई।

कमला : तो उसने अपने मरने की झूठी खबर क्यों मशहूर की थी? नानक के किस्से से तो केवल इतना ही जाना जाता है कि राजा बीरेन्द्रसिंह के यहाँ चोरी करने के कारण उसे ऐसा करना पड़ा था।

कमलिनी : पहिले तो मैं भी ऐसा ही समझती थी, और भूतनाथ ने भी इसके सिवा और कोई सबब अपने गायब होने का नहीं कहा था, मगर अब जो बातें मालूम हुई हैं, वे बहुत ही भयानक हैं और इस योग्य हैं कि उनका फल भोगने के डर से उसका जहाँ तक हो अपने को छिपाना उचित ही था। ओफ—भूतनाथ ने मुझे बड़ा धोखा दिया। अगर भूतनाथ के कागजात, जो मनोरमा के कब्जे में थे, और जो मेरे उद्योग से भूतनाथ को मिल गये थे, इस समय मौजूद होते तो बेशक बहुत-सी बातों का पता लगता, मगर अफसोस—अपनी भूल का दण्ड सिवाय अपने और किसको दूँ?

कमला : बहिन चाहे जो हो, मैं अपनी माँ की नसीहत कदापि भूल नहीं सकती, और न उसके विपरीत ही कुछ कर सकती हूँ। ईश्वर उसकी आत्मा को सुखी करे, वह बड़ी ही नेक थी। जिस समय चाचा ने मेरे बाप के मरने की खबर पहुँचायी थी उस समय वह बहुत ही बीमार थी। सब लोग तो रोने-पीटने लगे, मगर उसकी आँखों में आँसू की बूँद भी दिखायी नहीं देती थी। इसका कारण लोगों ने यही बताया कि रंज बहुत ज्यादे है, जिससे यह बेसुध हो रही है, मगर मेरी माँ ने मुझे चुपके-से बुलाके समझाया और यह भी कहा कि 'बेटी—मैं खूब समझती हूँ कि तेरा बाप मरा नहीं है, बल्कि कहीं छिपा बैठा है, और वास्तव में उसकी चाल-चलन ऐसी नहीं कि वह लोगों को अपना मुँह दिखाये, मगर क्या किया जाय, वह मेरा पति है, किसी के आगे उसकी निन्दा करना मेरा धर्म नहीं है। मैं खूब समझती हूँ कि अबकी दफे की बीमारी से मैं किसी तरह बच नहीं सकती, इसीलिए तुझे समझाती हूँ कि यदि कदाचित् तेरा बाप तुझे मिल जाय तो तू उससे किसी तरह की भलाई की आशा न रखियो, हाँ, तेरा चाचा बहुत ही लायक है, वह सिवाय भलाई के तेरे साथ बुराई कभी न करेगा, मगर मेरी समझ

में नहीं आता कि उसने स्वयं अपने भाई के मरने की झूठी खबर क्यों उड़ायी। खैर, जो हो, मैं तुझे अपने सर की कसम देकर कहती हूँ कि तू अपनी चाल-चलन को बहुत सम्हाले रहियो, और वही काम कीजियो, जिसमें किशोरी का भला हो, क्योंकि उसका नमक मेरे और तेरे रोम-रोम में भीना हुआ है—और साथ ही मुझे इस बात का भी पूरा विश्वास है कि किशोरी तुझे जी से चाहती है, और वह जो कुछ करेगी तेरे लिये अच्छा ही करेगी। बाकी रही किशोरी की माँ और किशोरी का नाना, सो किशोरी की माँ एक ऐसे आदमी के पाले पड़ी है कि जिसके मिजाज का कोई ठिकाना नहीं, ताज्जुब नहीं कि किसी-न-किसी दिन उसे खुद अपनी जान दे देनी पड़ जाय और किशोरी का नाना परले सिरे का क्रोधी है, अतएव सिवाय किशोरी के तुझे सहारा देनेवाला मुझे कोई दिखायी नहीं देता'।

इतना सुनते-सुनते किशोरी को अपनी माँ याद आ गयी और उसकी आँखों से टपाटप आँसू की बूँदें गिरने लगीं। कमला का भी यही हाल था। कमलिनी ने दोनों के आँसू पोछे और समझा-बुझाकर शान्त किया। थोड़ी देर तक बातचीत बन्द रही, इसके बाद फिर शुरू हुई।

कमला : (कमलिनी से) तो क्या मैं सुन सकती हूँ कि मेरे बाप ने क्या काम किये हैं, जिनके लिए आज उसे यह दिन देखना पड़ा ?

कमलिनी : हाँ हाँ, मैं वह सब हाल तुमसे कहूँगी, मगर कमला तुम यह न समझना कि भूतनाथ के सबब से हमलोगों के दिल में तुम्हारी मुहब्बत कम हो जायगी।

किशोरी : नहीं नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता ! मैं तुम्हारी नेकियों को कदापि नहीं भूल सकती। तुमने मेरी जान बचायी, तुमने दुःख के समय मेरा साथ दिया, और तुम्हारे ही भरोसे पर मैंने जो जी में आया किया।

लक्ष्मीदेवी : (कमला से) यद्यपि मेरा तुम्हारा साथ नहीं हुआ है, परन्तु मैं तुम्हारे दिल को इन्हीं दो-चार दिनों में अच्छी तरह समझ गयी हूँ। निःसन्देह तुम्हारी दोस्ती कदर करने लायक है और इस बात को तो हम लोग अच्छी तरह जानती हैं कि तुमने किशोरी के लिए बहुत तकलीफ उठायी इससे ज्यादे कोई किसी के लिए नहीं कर सकता ?

कमला : मैंने किशोरी के लिए कुछ भी नहीं किया, जोकुछ किया किशोरी की मुहब्बत ने किया है। मैं तो केवल इतना जानती हूँ कि मेरी जिन्दगी किशोरी की जिन्दगी के साथ है। यदि वह खुश है तो मैं भी खुश हूँ, इसे दुःख है तो मुझे भी रंज है। और फिर मैं किस लायक हूँ ! मगर उस समय बेशक मुझे बड़ा दुःख होगा, जब किसी को यह कहते सुनूँगी कि 'कमला का बाप दुष्ट था'। हाय, जिसके साथ मैं जान देने के लिए तैयार

हूँ, उसी के साथ मेरा बाप बुराई करे !

कमलिनी : नहीं नहीं कमला —तुम्हारे बाप ने किशोरी के साथ कोई बुराई नहीं की, बल्कि उसने हम तीनों बहिनों के साथ बुराई की है, जिन्हें तुम थोड़े दिन पहिले जानती भी नहीं थीं, अतएव तुम्हें रंज न करना चाहिए, फिर मैं यह भी उम्मीद करती हूँ कि राजा बीरेन्द्रसिंह, भूतनाथ का कसूर माफ कर देंगे।

लक्ष्मीदेवी : बहिन इन बातों को जाने भी दो ! चाहे भूतनाथ ने हम-लोगों के साथ कैसी ही बुराई क्यों न की हो, मगर हम लोग उसे अवश्य माफ करेंगे, क्योंकि कमला को किसी तरह उदास नहीं देख सकते। कमला, तू मेरी सगी बहिन से बढ़कर है ! जबकि किशोरी तुझे अपना मानती है तो निःसन्देह हम लोग उससे बढ़कर मानेंगीं। सच तो यों है कि आज हम लोग जिन सुखों की आशा कर रहे हैं, वे सब किशोरी के चरणों की बदौलत है।

इतना कहकर लक्ष्मीदेवी ने कमला को गले लगा लिया, और उसके आँसू पोंछे, क्योंकि इस समय उसकी आँखों से बेअन्दाज आँसू बह रहे थे। किशोरी भी रो रही थी, लक्ष्मीदेवी, लाडिली और कमलिनी की आँखें भी सूखी न थीं। कमलिनी ने सभों को समझाया, और बातों का रंग-ढंग बदल देने की कोशिश की। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहने के बाद सभों ने एक-एक करके अपना हाल कहना शुरू किया, यहाँ तक कि आज की तीन पहर रात बातचीत में ही बीत गयी, और इसके बाद एक नयी घटना ने सभों को चौंका दिया।

सातवाँ बयान

रात पहर-भर से कम रह गयी थी, जब किशोरी, कामिनी, कमला, लक्ष्मी-देवी, लाडिली और कमलिनी की बातें पूरी हुईं, और उन्होंने चाहा कि अब उठकर नीचे चलें और दो घण्टे आराम करें। इस समय महल में बिल्कुल सन्नाटा था। लौंडियाँ बेफिक्री के साथ खुर्राटे ले रही थीं, क्योंकि कमलिनी ने सभों को अपने सामने से बिदा कर दिया था, और कह दिया था कि बिना बुलाये कोई हम लोगों के पास न आवे।

इस समय ये सब जिस महल में हैं, वह राजमहल के नाम से पुकारा जाता था। महाराज दिग्विजयसिंह की रानी इसी में रहा करती थी। इसके बगल में पीछे की तरफ महल का वह दूसरा भाग था, जिसमें किशोरी उन दिनों में रहती थी, जब दिग्विजयसिंह की जिन्दगी में जबर्दस्ती इस मकान के अन्दर लायी गयी थी, और लाली तथा कुन्दन भी किशोरी की

हिफाजत के लिए उसी मकान में रहा करती थीं, जिसका हाल सन्तति के तीसरे भाग के आठवें बयान में लिख आये हैं।

पाठक भूले न होंगे कि उसी महल या बाग में (जिसमें पहिले किशोरी रहा करती थी) एक कोने पर वह इमारत थी जिसका दरवाजा हमेशा बन्द रहता था, और जिसकी छत फोड़कर किशोरी को साथ लिये लाली उसके अन्दर चली गयी थी। यद्यपि महल का वह भाग अलग था, मगर राजमहल की छत पर से वह मकान बखूबी दिखायी देता था। किशोरी, कमला, लाडिली, कामिनी, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी की बात जब समाप्त हुई, और वे सब नीचे जाने के इरादे से उठकर खड़ी हुईं, तो यकायक लाडिली की निगाह उस इमारत पर पड़ी, जिसके अन्दर किशोरी को लेकर वह (लाली) चली गयी थी। आज भी उस मकान का दरवाजा उसी तरह बन्द था, जैसे दिग्विजयसिंह के समय में बन्द रहा करता था, हाँ, पहिले की तरह आज उसके दरवाजे पर पहरा नहीं पड़ता था, उस मकान की छत जिसमें लाली ने सेंध लगायी थी, दुरुस्त कर दी गयी थी! बाग में चारों तरफ सन्नाटा था, क्योंकि आजकल उसमें कोई रहता न था, और यह बात कमलिनी और लाडिली इत्यादि को मालूम थी।

जिस समय लाडिली की निगाह उस मकान की छत पर पड़ी, उसे एक आदमी दिखायी दिया, जो बड़ी मुस्तैदी के साथ चारों तरफ घूम-घूम और देख-देखकर शायद इस बात की टोह ले रहा था कि कोई आदमी दिखायी तो नहीं देता, मगर किशोरी और कामिनी इत्यादि ऐसे ठिकाने थीं कि ये सब चारों तरफ सबको देखतीं, मगर इन्हें कोई नहीं देख सकता था, क्योंकि जिस मकान की छत पर ये सब थीं, उसके चारों तरफ पुर्से-भर ऊँची कनाती दीवार थी, और उसमें बहुत से सूराख देखने और तीर मारने के लायक बने हुए थे, और इस समय लाडिली ने भी उस आदमी को ऐसे ही एक सूराख की राह से ही देखा था।

लाडिली ने कमलिनी का हाथ पकड़ लिया, और उस इमारत की तरफ देखने का इशारा किया। कमलिनी ने और इसके बाद एक-एक करके सभों ने उस आदमी को देखा, और अब वह क्या करेगा, यह जानने के लिए सभों की निगाह उसी तरफ अटक गयी।

थोड़ी देर बाद उस छत पर नीचे की तरफ से आती हुई रोशनी दिखायी दी, जिससे मालूम हुआ कि उसकी छत इस समय पुनः तोड़ी गयी है, और नीचे की कोठरी में और भी कई आदमी हैं। रोशनी दिखायी देने के बाद दो आदमी और निकल आये, और तीन आदमी उस छत पर दिखायी देने लगे। अब पूरी तरह निश्चय हो गया कि उस मकान की छत

तोड़ी गयी है। उन तीनों आदमियों ने बड़े गौर से उस तरफ देखा, जहाँ किशोरी, कामिनी इत्यादि खड़ी थीं, मगर कुछ दिखायी न दिया, इसके बाद उन तीनों ने झुककर छत के नीचे से एक भारी गठरी निकाली। उसके बाद नीचे से दो आदमी और निकलकर छत पर आ गये तथा अब वहाँ पाँच आदमी दिखायी देने लगे।

कमलिनी ने कमला का हाथ पकड़के कहा, "बहिन इन शैतानों की कार्रवाई बेशक देखने और जाँचने योग्य है, ताज्जुब नहीं कि कोई अनूठी बात मालूम हो। अस्तु, तू जाकर जल्दी से तेजसिंह को इस मामले की खबर कर दे, फिर जो कुछ उनके जी में आवेगा करेंगे।" इतना सुनते ही कमला तेजसिंह की तरफ चली गयी, और वे सब फिर उसी तरफ देखने लगीं।

थोड़ी देर तक वे पाँचों आदमी बैठकर उस गठरी के साथ न मालूम क्या करते रहे, इसके बाद कमन्द के जरिये वह गठरी बाहर की तरफ बाग में उतार दी गयी। उसके पीछे वे पाँचों आदमी भी बाग में उतर आये, और गठरी को लिये हुए बाग के बीचों-बीचवाले उस कमरे की तरफ चले गये, जिसमें पहिले किशोरी रहा करती थी। उसी समय कमला भी लौटकर आ पहुँची, और बोली, "तेजसिंहजी को खबर कर दी गयी, और वे देवीसिंहजी वगैरह ऐयारों को साथ लेकर किसी गुप्त बाग में गये हैं।"

कमलिनी : मुझे भी वहाँ जाना उचित है।

किशोरी : क्यों ?

कमलिनी : उस मकान के गुप्त भेद की खबर तेजसिंह को नहीं है, कदाचित् कोई आवश्यकता पड़े।

किशोरी : कोई आवश्यकता न पड़ेगी, बस चुपचाप खड़ी तमाशा देखो।

लक्ष्मीदेवी : इनमें से अगर एक आदमी को भी तेजसिंह पकड़ लेंगे, तो सब भेद खुल जायगा।

कमलिनी : हाँ, सो तो है।

कमला : मैं समझती हूँ कि उस मकान के अन्दर और भी कई आदमी होंगे। अगर वे सब गिरफ्तार हो जाते तो बहुत ही अच्छा होता।

कमलिनी : इसी से तो मैं कहती हूँ कि मुझे वहाँ जाने दो। मेरे पास तिलिस्मी खंजर मौजूद है, मैं बहुत कुछ कर गुजरूँगी।

किशोरी : नहीं बहिन, मैं तुम्हें कदापि न जाने दूँगी, मुझे डर लगता है, तुम्हारे बिना मैं यहाँ नहीं रह सकती।

कमलिनी : खैर, मैं न जाऊँगी, तुम्हारे ही पास रहूँगी।

हिफाजत के लिए उसी मकान में रहा करती थीं, जिसका हाल सन्तति के तीसरे भाग के आठवे बयान में लिख आये हैं।

पाठक भूले न होंगे कि उसी महल या बाग में (जिसमें पहिले किशोरी रहा करती थी) एक कोने पर वह इमारत थी जिसका दरवाजा हमेशा बन्द रहता था, और जिसकी छत फोड़कर किशोरी को साथ लिये लाली उसके अन्दर चली गयी थी। यद्यपि महल का वह भाग अलग था, मगर राजमहल की छत पर से वह मकान बखूबी दिखायी देता था। किशोरी, कमला, लाडिली, कामिनी, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी की बात जब समाप्त हुई, और वे सब नीचे जाने के इरादे से उठकर खड़ी हुईं, तो यकायक लाडिली की निगाह उस इमारत पर पड़ी, जिसके अन्दर किशोरी को लेकर वह (लाली) चली गयी थी। आज भी उस मकान का दरवाजा उसी तरह बन्द था, जैसे दिग्विजयसिंह के समय में बन्द रहा करता था, हाँ, पहिले की तरह आज उसके दरवाजे पर पहरा नहीं पड़ता था, उस मकान की छत जिसमें लाली ने सेंध लगायी थी, दुरुस्त कर दी गयी थी! बाग में चारों तरफ सन्नाटा था, क्योंकि आजकल उसमें कोई रहता न था, और यह बात कमलिनी और लाडिली इत्यादि को मालूम थी।

जिस समय लाडिली की निगाह उस मकान की छत पर पड़ी, उसे एक आदमी दिखायी दिया, जो बड़ी मुस्तैदी के साथ चारों तरफ घूम-घूम और देख-देखकर शायद इस बात की टोह ले रहा था कि कोई आदमी दिखायी तो नहीं देता, मगर किशोरी और कामिनी इत्यादि ऐसे ठिकाने थीं कि ये सब चारों तरफ सबको देखतीं, मगर इन्हें कोई नहीं देख सकता था, क्योंकि जिस मकान की छत पर ये सब थीं, उसके चारों तरफ पुर्से-भर ऊँची कनाती दीवार थी, और उसमें बहुत से सूराख देखने और तीर मारने के लायक बने हुए थे, और इस समय लाडिली ने भी उस आदमी को ऐसे ही एक सूराख की राह से ही देखा था।

लाडिली ने कमलिनी का हाथ पकड़ लिया, और उस इमारत की तरफ देखने का इशारा किया। कमलिनी ने और इसके बाद एक-एक करके सभों ने उस आदमी को देखा, और अब वह क्या करेगा, यह जानने के लिए सभों की निगाह उसी तरफ अटक गयी।

थोड़ी देर बाद उस छत पर नीचे की तरफ से आती हुई रोशनी दिखायी दी, जिससे मालूम हुआ कि उसकी छत इस समय पुनः तोड़ी गयी है, और नीचे की कोठरी में और भी कई आदमी हैं। रोशनी दिखायी देने के बाद दो आदमी और निकल आये, और तीन आदमी उस छत पर दिखायी देने लगे। अब पूरी तरह निश्चय हो गया कि उस मकान की छत

तोड़ी गयी है। उन तीनों आदमियों ने बड़े गौर से उस तरफ देखा, जहाँ किशोरी, कामिनी इत्यादि खड़ी थीं, मगर कुछ दिखायी न दिया, इसके बाद उन तीनों ने झुककर छत के नीचे से एक भारी गठरी निकाली। उसके बाद नीचे से दो आदमी और निकलकर छत पर आ गये तथा अब वहाँ पाँच आदमी दिखायी देने लगे।

कमलिनी ने कमला का हाथ पकड़के कहा, "बहिन इन शैतानों की कार्रवाई बेशक देखने और जाँचने योग्य है, ताज्जुब नहीं कि कोई अनूठी बात मालूम हो। अस्तु, तू जाकर जल्दी से तेजसिंह को इस मामले की खबर कर दे, फिर जो कुछ उनके जी में आवेगा करेंगे।" इतना सुनते ही कमला तेजसिंह की तरफ चली गयी, और वे सब फिर उसी तरफ देखने लगीं।

थोड़ी देर तक वे पाँचों आदमी बैठकर उस गठरी के साथ न मालूम क्या करते रहे, इसके बाद कमन्द के जरिये वह गठरी बाहर की तरफ बाग में उतार दी गयी। उसके पीछे वे पाँचों आदमी भी बाग में उतर आये, और गठरी को लिये हुए बाग के बीचों-बीचवाले उस कमरे की तरफ चले गये, जिसमें पहिले किशोरी रहा करती थी। उसी समय कमला भी लौटकर आ पहुँची, और बोली, "तेजसिंहजी को खबर कर दी गयी, और वे देवीसिंहजी वगैरह ऐयारों को साथ लेकर किसी गुप्त बाग में गये हैं।"

कमलिनी : मुझे भी वहाँ जाना उचित है।

किशोरी : क्यों ?

कमलिनी : उस मकान के गुप्त भेद की खबर [illegible] नहीं है, कदाचित् कोई आवश्यकता पड़े।

किशोरी : कोई आवश्यकता न पड़ेगी, बस चुप[illegible] देखो।

लक्ष्मीदेवी : इनमें से अगर एक आदमी को भी तेजसिंह प[illegible] सब भेद खुल जायगा।

कमलिनी : हाँ, सो तो है।

कमला : मैं समझती हूँ कि उस मकान के अन्दर और भी कई आद[illegible] होंगे। अगर वे सब गिरफ्तार हो जाते तो बहुत ही अच्छा होता।

कमलिनी : इसी से तो मैं कहती हूँ कि मुझे वहाँ जाने दो। मेरे पास तिलिस्मी खंजर मौजूद है, मैं बहुत कुछ कर गुजरूँगी।

किशोरी : नहीं बहिन, मैं तुम्हें कदापि न जाने दूँगी, मुझे डर लगता है, तुम्हारे बिना मैं यहाँ नहीं रह सकती।

कमलिनी : खैर, मैं न जाऊँगी, तुम्हारे ही पास रहूँगी।

अब हम बाग के उस हिस्से का हाल लिखते हैं, जिसमें वे पाँचों आदमी गठरी लिये दिखायी दे चुके हैं।

वे पाँचों आदमी गठरी लिये हुए बाग के बीचोबीचवाले उस मकान में पहुँचे, जिसमें पहिले किशोरी रहती थी। जब उस मकान के अन्दर पहुँच गये तो उन लोगों ने चकमक से आग झाड़ मशाल जलायी, और गठरी को बँधी-बँधायी जमीन पर छोड़कर आपुस में यों बातचीत करने लगे—

एक : अच्छा अब क्या करना चाहिए ?

दूसरा : गठरी को इसी जगह छोड़कर राजमहल में पहुँचना, और अपना काम करना चाहिए।

तीसरा : नहीं नहीं, पहिले इस गठरी को ऐसी जगह रखना या पहुँचाना चाहिए, जिसमें सवेरा होते ही किसी-न-किसी की निगाह इस पर अवश्य पड़े।

चौथा : बाग के इस हिस्से में कोई रहता तो है नहीं, फिर किसी की निगाह इस पर क्यों पड़ने लगी ?

पाँचवाँ : अगर ऐसा है तो इसे भी अपने साथ ही राजमहल में ले चलना।

पहिला : अजब आदमी हो, राजमहल में अपना जाना तो कठिन हो रहा है, तुम कहते हो गठरी भी लेते चलो !

दूसरा : फिर इस बाग में इस गठरी का रखना बेकार ही है, जहाँ कोई आदमी रहता ही नहीं !

चौथा : बस अब इसी हुज्जत में रात बिता दो ! अभी पहिले अपना असल काम तो कर लो जिसके लिए आये हो, चलो पहिले तहखाना खोलो।

दूसरा : ठीक है, मैं भी यही उचित समझता हूँ।

इतना कहकर वह खड़ा हो गया और अपने साथियों को भी उठने का इशारा किया।

आठवाँ बयान

उन लोगों ने उस बँधी-बँधाई गठरी को तो उसी जगह छोड़ दिया और बीचवाले कमरे के दरवाजे पर पहुँचे जिसमें ताला बन्द था। एक आदमी ने लोहे की सलाई के सहारे ताला खोला, और इसके बाद सब-के-सब उस कमरे के अन्दर जा पहुँचे। यह कमरा इस समय भी हर तरह से सजा और अमीरों के रहने लायक बना हुआ था। पहिले तो उन आदमियों ने मशाल

की रोशनी में वहाँ की हरएक चीज को अच्छी तरह गौर से देखा और इसके बाद सभी ने मिलकर वहाँ का फर्श जो जमीन पर बिछा हुआ था, उठा डाला। यहाँ की जमीन संगमर्मर के चौखूटे पत्थर के टुकड़ों से बनी हुई थी, जिसे देख एक ने कहा—

एक : अगर हम लोगों का अन्दाज ठीक है, और वास्तव में इसी कमरे का पता हम लोगों को दिया गया है, तो यहाँ की जमीन में सूराख करना कोई बड़ी बात नहीं है, दो-चार पत्थर उखाड़ने से सहज ही में काम चल जायेगा।

दूसरा : बेशक ऐसा ही है, मगर मैं समझता हूँ कि थोड़ी देर रुककर बाबाजी की राह देखना उचित होगा।

तीसरा : अजी, अपना काम करो, इस तरह रुका-रुकी में रात बीत जायेगी तो मुफ्त में मारे पड़ेंगे।

पहिला : मारे क्या पड़ेंगे ? यहाँ है ही कौन जो हम लोगों को गिरफ्तार करेगा !

तीसरा : (कुछ रुककर और बाहर की तरफ कान लगाकर) किसी के आने की आहट मालूम होती है।

चौथा : (ध्यान देकर) ठीक तो है, मगर सिवाय बाबाजी के और होगा ही कौन ?

तीसरा : लीजिए आ ही तो गये।

चौथा : हमने कहा था कि बाबाजी होंगे।

इतने ही में दो आदमियों को साथ लिये बाबाजी भी वहाँ आ पहुँचे, वही बाबाजी जो मायारानी के तिलिस्मी दारोगा थे। उसके साथ में एक तो मायारानी थी, और दूसरा आदमी वही शेरअलीखाँ पटने का सूबेदार था, जिसकी लड़की गौहर का हाल ऊपर के किसी हाल में लिखा जा चुका है। मायारानी इस समय अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थी, मगर उसकी पोशाक जनाने ढंग की और उसी शानशौकत की थी, जैसी कि उन दिनों पहिरा करती थी, जब तिलिस्म की रानी कहलाने का उसे हक था, और अपने ऊपर किसी तरह की आफत आने का शानोगुमान भी न था।

हम इस जगह थोड़ा-सा हाल तेजसिंह का लिख देना भी उचित समझते हैं। कमला की जुबानी समाचार पाकर तेजसिंह तुरन्त तैयार हो गये, और तारासिंह वगैरह ऐयारों को साथ लिये हुए महल के उस हिस्से में पहुँचे, जिसमें ऊपर लिखी कार्रवाई हो रही थी। उन पाँचों बदमाशों को कमरे के अन्दर जाते हुए तेजसिंह ने देख लिया था, इसलिए वे छिपते हुए पिछली राह से कमरे की छत पर चढ़ गये। छत के बीचोबीच में एक

रोशनदान जमीन से दो हाथ ऊँचा बना हुआ था, जिसके जरिये कमरे के अन्दर रोशनी और कुछ धूप भी पहुँचा करती थी। उस रोशनदान में चारों तरफ बिल्लौरी शीशे इस ढंग के लगे हुए थे, जिन्हें जब चाहें खोल और बन्द कर सकते थे। तारासिंह तो हिफाजत के लिए हाथ में नंगी तलवार लिये सीढ़ी पर खड़े हो गये, और तेजसिंह, देवीसिंह तथा भैरोसिंह उसी रोशनदान की राह से कमरे के अन्दर का हाल देखने और उन शैतानों की बातचीत सुनने लगे।

अब हम फिर कमरे के अन्दर का हाल लिखते हैं। बाबाजी ने आने के साथ ही उन पाँचों आदमियों की तरफ देखके कहा—

बाबा : अभी तक तुम लोग सोच-विचार में ही पड़े हो ?

एक : अनजान जगह में हम लोग कौन काम जल्दी के साथ कर सकते हैं ? खैर, अब यह बताइए कि यही जमीन खोदी जायगी या कोई और ?

बाबा : हाँ, यही जमीन खोदी जायगी, बस जल्दी करो, रात बहुत कम है। सिर्फ आठ-दस पत्थर उखाड़ डालो, दो हाथ से ज्यादे मोटी छत नहीं है।

दूसरा : बात-की-बात में सब काम ठीक किये देता हूँ, कोई हर्ज नहीं।

इतना कहकर उन लोगों ने जमीन खोदने में हाथ लगा दिया, और बाबाजी, मायारानी तथा शेरअलीखाँ में यों बातचीत होने लगी—

माया : जिस राह से हमलोग आये हैं, उसी राह से अपने फौजी सिपाहियों को भी ले आते तो क्या हर्ज था ?

बाबा : तुम तो बाज़ दफे बच्चों की-सी बात करती हो। एक तो वह तिलिस्मी रास्ता इस लायक नहीं कि उस राह से हम सैकड़ों फौजी आदमियों को ला सकें, क्या जाने किससे क्या गलती हो जाय या कैसी आफत आ पड़े, सिवाय इसके सैकड़ों, बल्कि हजारों आदमियों पर तिलिस्मी गुप्त भेदों का प्रकट कर देना क्या मामूली बात है ? अगर ऐसा होता तो बुजुर्ग लोग, जिन्होंने इस किले और तिलिस्म को तैयार किया है, यह रास्ता क्यों बनाते, जिसे इस समय हम लोग खोद रहे हैं ? इसे भी जाने दो, सबसे भारी बात सोचने की यह है कि इस तिलिस्मी रास्ते से जिधर से हम लोग आये हैं, हमारी फौज इस किले में तब पहुँच सकती है, जब वह इस पहाड़ के ऊपर चढ़ आये, मगर यह कब हो सकता है कि हजारों आदमी इस पहाड़ पर चढ़ आवें, और किले वालों को खबर तक न हो। ऐसा होना बिल्कुल असम्भव है, मगर जब हम इस रास्ते को खोल देंगे तो हमारे फौजी सिपाहियों को पहाड़ पर चढ़ने की जरूरत न रहेगी, क्योंकि इसका दूसरा मुहाना 'जस' नदी के किनारे पड़ता है जो इस पहाड़ के नीचे कुछ हटकर

बहती है।

माया : तो क्या यहाँ से उस नदी तक जाने के लिए पहाड़ के अन्दर-ही-अन्दर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं ?

बाबा : बेशक, ऐसा ही है। रास्ते के बारे में इस किले की अवस्था ठीक 'देवगढ़'* की तरह समझना चाहिए। मैं जहाँ तक ख्याल करता हूँ, यह रोहतासगढ़ का किला और वह देवगढ़ का किला एक ही आदमी का बनवाया हुआ है।

माया : तो क्या फौज के सिपाही भीतर-ही-भीतर इस छत को नहीं तोड़ सकते थे, जो दूसरी राह से आकर हम लोगों को यह काम करना

---

* 'देवगढ़' का किला हैदराबाद (दक्षिण) से लगभग तीन-सौ मील के उत्तर और पश्चिम के कोने में है। यह किला बहुत ऊँची पहाड़ी के ऊपर विचित्र ढंग का बना हुआ है, जिसके देखने से आश्चर्य होता है। पहाड़ का बहुत बड़ा भाग छील-छालकर दीवार की जगह कायम किया गया है। पहाड़ के चारों तरफ एक खाई है, उसके बाद तेहरी दीवार है। अन्दर जाने का रास्ता किसी तरफ से मालूम नहीं होता। शहर उन तीनों दीवारों के बाहर बसा हुआ है और शहर के शहरपनाह की बड़ी मजबूत दीवार है। पहाड़ काटकर अन्दर किले में जाने के लिए, उसी तरह की सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, जैसे किसी बुर्ज या धरहरे के ऊपर चढ़ने के लिए होती हैं ! उस राह से जानकार आदमी का भी बिना मशाल की रोशनी के सीढ़ियाँ चढ़कर किले के अन्दर जाना बहुत मुश्किल है। किले के अन्दर, जहाँ वह रास्ता समाप्त हुआ है, उसके मुँह पर भारी लोहे का तवा इसलिए रक्खा हुआ है कि यदि कदाचित् दुश्मन इस रास्ते से घुस भी आवे तो तवे के ऊपर सैकड़ों मन लकड़ियाँ रखकर आग जला दी जाय, जिसमें उसकी गर्मी से दुश्मन अन्दर-ही-अन्दर जल मरें। इस किले में पानी के कई हौज हैं और एक सौ साठ फीट ऊँचा एक बुर्ज भी है, जिस पर से दूर-दूर तक की छटा दिखायी देती है। यह किला अभी तक देखने लायक है, देखने से अक्ल दंग होती है, मुमकिन नहीं कि कोई इसे लड़कर फतह कर सके। चौदहवीं सदी में दिल्ली का बादशाह 'मुहम्मद तुगलक' दिल्ली उजाड़ के वहाँ की रिआया को इसी देवगढ़ में बसाने के लिए ले गया था और देवगढ़ का नाम दौलताबाद रखकर इसे अपनी राजधानी कायम किया था, परन्तु अन्त में उसे पुनः लौटकर आना पड़ा। देवगढ़ के इर्द-गिर्द में कई स्थान अब भी देखने योग्य हैं, जैसे कि एलोरा की गुफा इत्यादि, जिसका आनन्द देशाटन करनेवालों को ही मिल सकता है।

पड़ा ?

बाबा : नहीं, इसका एक खास सबब और भी है, जो इस समय छत के नीचे जाने ही से तुम्हें मालूम हो जायेगा। (शेरअलीखाँ की तरफ देखके) मैं समझता हूँ, आपकी फौज उस नदी के किनारे नियत स्थान पर पहुँच गयी होगी ?

शेर : जरूर पहुँच गयी होगी, केवल हमलोगों के जाने की देर है, मगर अफसोस यही है कि अब रात बहुत कम रह गयी है।

बाबा : कोई हर्ज नहीं, आजकल इस बाग में बिल्कुल सन्नाटा रहता है, कोई झाँकने के लिए भी नहीं आता, अगर पहर दिन चढ़े तक भी हमारी फौज यहाँ तक आ पहुँचे तो किसी को पता न लगेगा, और बात-की-बात में यह किला अपने कब्जे में आ जायेगा। बड़ी खुशी की बात तो यह है कि आजकल किशोरी, कामिनी, लाडिली और तारा भी इस किले में मौजूद हैं।

इतने ही में बाहर की तरफ से आवाज आयी, "तारा मत कहो लक्ष्मी-देवी कहो, क्योंकि अब तारा और लक्ष्मीदेवी में कोई भेद नहीं रहा।"

आश्चर्य से बाबाजी, मायारानी, शेरअलीखाँ और उन पाँचों आदमियों की निगाह जो जमीन खोदने में लगे हुए थे, दरवाजे की तरफ घूम गयी, और उन्होंने एक विचित्र आदमी को कमरे के अन्दर आते देखा। हमारे ऐयार लोग भी जो छत के ऊपर रोशनदान की राह से झाँककर देख रहे थे, ताज्जुब के साथ उस आदमी की तरफ देखने लगे।

इस विचित्र आदमी का तमाम बदन बेशकीमत स्याह पोशाक और फौलादी जेर : मोजे और जाली इत्यादि से ढँका हुआ था, केवल चेहरे का हिस्सा फौलादी जालीदार बारीक नकाब के अन्दर से झलक रहा था, मगर वह इतना ज्यादे काला था, और लाल तथा बड़ी-बड़ी आँखें ऐसी चमक रही थीं कि देखने से डर मालूम होता था। यह आदमी बहुत ही ताकतवर है, इसका अन्दाज तो केवल इतने ही से मिल सकता था कि उसके बदन पर कम-से-कम दो मन लोहे का सामान था, और उसकी चाल बहुत ही गम्भीर तथा निडर बहादुरों की-सी थी। ढाल-तलवार और एक खंजर के सिवाय और कोई हर्बा उसके पास दिखायी न देता था।

इस विचित्र आदमी के आते ही ताज्जुब के साथ-ही-साथ डर भी सभों के दिल पर छा गया, और बाबाजी ने घबरायी आवाज में इस आदमी से पूछा, "आप कौन हैं ?"

आदमी : हम जिन्न हैं।

बाबा : मैं नहीं समझता कि जिन्न किसे कहते हैं

आदमी : जिन्न उसको कहते हैं, जो सब जगह पहुँच सके, भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों का हाल जाने, कोई हर्बा उस पर असर न करे और जो किसी के मारने से न मरे।

बाबा : (ताज्जुब से) तो क्या ये सब गुण आप में हैं ?

जिन्न : बेशक !

बाबा : मैं कैसे समझूं ?

जिन्न : आजमा के देख लो !!

बाबाजी तो उस जिन्न से बातें कर रहे थे, मगर मायारानी और शेरअलीखाँ का डर के मारे कलेजा सूख रहा था। मायारानी तो औरत ही थी, मगर शेरअलीखाँ बहादुर होकर भी डर के मारे काँप रहा था, इसका सबब शायद यह हो कि मुसलमान लोग जिन्न का होना वास्तविक और सच मानते हैं। जो हो, मगर बाबाजी अर्थात् दारोगा को जिन्न की बात का विश्वास नहीं हो रहा था, फिर भी जिस समय उसने कहा कि 'आजमा के देख लो' तो उस समय दारोगा भी बेचैन हो गया, और सोचने लगा कि इसे किस तरह आजमावें ?

जिन्न : शायद तुम सोच रहे हो कि इस जिन्न को किस तरह आजमावें, क्योंकि तुम्हारे पास कोई जरिया आजमाने का नहीं है, अच्छा हम खुद अपनी बात का सबूत देते हैं, लो सम्हल जाओ।

इतना कहकर उस जिन्न ने अपना बदन झाड़ा और अँगड़ाई ली, इसके बाद ही उसके तमाम बदन में से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं, और इतनी ज्यादा चमक पैदा हुई कि सभों की आँखें चौंधिआने लगीं। यह चिनगारियाँ और चमक उस फौलादी जेर: और जाल में से निकल रही थी, जो वह अपने बदन में पहिने हुए था। यह हाल देखकर मायारानी, शेरअली-खाँ और पाँचों आदमी घबड़ा गये, मगर दारोगा को फिर भी विश्वास न हुआ, तिलिस्मी खंजर की तरह उसके जेर: और जाल में भी किसी प्रकार का तिलिस्मी असर खयाल करके उसने अपने दिल को समझा लिया और कहा।

दारोगा : खैर, इससे कोई मतलब नहीं, आप यह कहिए कि यहाँ क्यों आये हैं ?

जिन्न : (चिनगारियों और चमक को बन्द करके) तुम लोगों की हरमजदगी का तमाशा देखने और तुम लोगों के कामों में विघ्न डालने के लिए।

दारोगा : यह तो मैं खूब जानता हूं कि तुम न तो जिन्न हो और न शैतान ही, बल्कि कोई धूर्त ऐयार हो, यह सामान जो तुम्हारे बदन पर है,

तिलिस्मी है, और सहज में तुम्हें कोई गिरफ्तार नहीं कर सकता, मगर साथ ही इसके यह भी समझ रक्खो कि मैं तिलिस्म का दारोगा हूँ, और चालीस वर्ष तक तिलिस्म का इन्तजाम करता रहा हूँ।

जिन्न : (जोर से हँसकर) बेईमान, हरामखोर, उल्लू का पट्ठा कहीं का !

दारोगा : (गुस्से से) बस, जुबान सम्हालकर बातें करो।

जिन्न : अबे जा दूर हो सामने से। चालीस वर्ष तक तिलिस्म का इन्तजाम करता रहा ! ऐसे-ऐसे बेईमान और मालिक की जान लेनेवाले भी अगर तिलिस्मी कारखाने को जानने की डींग हाँकें, तो बस हो चुका। बस अब बेहतरी इसी में है कि तुम यहाँ से चले जाओ और जो किया चाहते हो, उसका ध्यान छोड़ो नही तो अच्छा न होगा।

इतना कहकर उसने शेरअलीखाँ, मायारानी और उन पाँचों आदमियों की तरफ भी देखा जो इस मकान में पहिले आये थे।

दारोगा ने क्षण-भर तो कुछ सोचा और फिर शेरअलीखाँ की तरफ देखके बोला, "क्या एक अदना ऐयार मक्कारी करके हम लोगों का बना-बनाया खेल चौपट कर देगा ? देख क्या रहे हो ! मारो इस कमबख्त को, बचकर जाने न पावे।"

शेरअलीखाँ पहिले तो कुछ सहमा हुआ था, मगर दारोगा की बातचीत ने उसे निडर कर दिया, और जिन्न का खयाल छोड़ उसने भी कुछ-कुछ यकीन कर लिया कि यह कोई ऐयार है। आखिर उसने म्यान से तलवार निकाल ली, और उन पाँचों आदमियों की तरफ जो जमीन खोदने के लिए आये थे, कुछ इशारा करके जिन्न के ऊपर हमला किया। जिन्न ने इसकी कुछ भी परवाह न की और बड़े गम्भीर भाव से चुपचाप खड़ा रहा, तथा शेरअली-खाँ के हमले को बर्दाश्त कर गया, मगर शेरअलीखाँ के हमले का नतीजा कुछ भी न निकला, क्योंकि उसकी तलवार जिन्न के फौलादी जेर: (कवच) पर बड़े जोर से बैठी और टूटकर झन्नाटे की आवाज देती हुई, जमीन पर गिर पड़ी। इसके साथ ही उन पाँचों आदमियों ने भी जिन्न पर हमला किया, मगर जिन्न ने इसकी भी कुछ परवाह न की, बल्कि शेरअलीखाँ के गले में हाथ डाल तथा पैर की आड़ लगाकर ऐसा झटका दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पड़ा। जिन्न उसकी छाती पर सवार हो गया और जोर से बोला, "खबरदार, मुझ पर कोई हमला न करे। कोई मेरी तरफ बढ़ा और मैंने शेरअलीखाँ का सर काटकर अलग किया।"

मालूम होता है कि वे पाँचों आदमी शेरअलीखाँ के ही नौकर थे, क्योंकि उसी के इशारे से जिन्न पर हमला करने के लिए तैयार हो गये थे, और जब

उसी को जिन्न के नीचे मजबूर देखा तो यह सोचकर कि कदाचित् हमलोगों के हमला करने से नाराज होकर जिन्न उसका सिर काट ही न ले हमला करने से रुक गये, और पीछे हटकर ताज्जुब की निगाहों से उस विचित्र व्यक्ति को देखने लगे, जिसने अपना नाम जिन्न रक्खा था, साथ ही इसके डर और आश्चर्य ने मायारानी और दारोगा के पैर भी जमीन के साथ चिपका दिये ।

जब हमला करनेवाले अलग हो गये तो जिन्न ने नर्मी के साथ शेरअली-खाँ से कहा, जो उसके नीचे दबा हुआ मजबूर पड़ा था, और जीवन की आशा छोड़ चुका था—

जिन्न : मुझे आपसे किसी तरह की दुश्मनी नहीं और न मैं आपकी जान ही लिया चाहता हूँ, सिर्फ दो बात आपसे पूछा चाहता हूँ, लेकिन अगर इसमें किसी तरह के हीले और हुज्जत को जगह मिलेगी तो लाचार रहम भी न कर सकूँगा ।

शेर : वे कौन सी दो बातें हैं ।

जिन्न : एक तो जोकुछ मैं इस समय आपसे पूछूँ, उसका जवाब सच-सच दीजिए ।

शेरअलीखाँ ने सिर हिला दिया, मानो स्वीकार किया ।

जिन्न : दूसरी बात मैं अपने सवालों के अन्त में कहूँगा ।

शेर : बहुत अच्छा, इन्हें भी पूछ डालिए ।

जिन्न : आपने इस कमबख्त 'मुन्दर' का साथ क्यों दिया, जिसने अपने को मायारानी के नाम से मशहूर कर रक्खा है ।

'मुन्दर' शब्द में जादू का असर था, जिसने मायारानी और दारोगा के कलेजे को दहला दिया । यह एक ऐसी गुप्त और भेद की बात थी, जिसके सुनने के लिए दोनों तैयार न थे और न यहाँ सुनने की उन दोनों को आशा ही थी ।

शेर : (ताज्जुब से) मुन्दर ।

जिन्न : हाँ, मुन्दर, आप यह न समझिए कि यह आपके दोस्त बलभद्र-सिंह की लड़की है ।

शेर : तो क्या यह हमारे दोस्त के दुश्मन हेलासिंह की लड़की मुन्दर है ?

जिन्न : जी हाँ ।

शेर : (जोश के साथ) बस आप मेहरबानी करके मुझे छोड़ दीजिए । अगर आप बहादुर हैं, और आपको बहादुरी का दावा है तो मुझे छोड़िए, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अगर आपकी बात सच निकली तो आपकी

गुलामी अपनी इज्जत का सबब समझूँगा।

जिन्न तुरन्त उसकी छाती पर से उठकर अलग खड़ा हो गया, और मायारानी तथा दारोगा की सूरत गौर से देखने लगा, जिनके चेहरे का रंग गिरगिट की तरह बदल रहा था।

शेरअलीखाँ उठकर खड़ा हो गया और गुस्से-भरी आँखों से मायारानी की तरफ देखकर बोला, "इस बहादुर ने (जिन्न की तरफ इशारा करके) जो कुछ कहा क्या वह ठीक है?"

माया : झूठ, बिल्कुल झूठ !

जिन्न : शायद मुन्दर को इस बात की खबर नही कि असली मायारानी अर्थात् लक्ष्मीदेवी का बाप प्रकट हो गया और बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के सामने ही वह अपनी लड़की लक्ष्मीदेवी से मिला, जो तारा के नाम से कमलिनी के मकान में इस तरह रहती थी कि कमलिनी को भी अब तक उसका हाल मालूम न होने पाया था, और इस समय बलभद्रसिंह और लक्ष्मीदेवी इस रोहतास-गढ़ किले के अन्दर मौजूद भी हैं। (शेरअलीखाँ से) मैं समझता हूँ कि तुम उनसे मिलना खुशी से पसन्द करोगे, और मुलाकात होने पर सच-झूठ में किसी तरह का शक भी न रहेगा, अच्छा अब मैं जाता हूँ, तुम जो मुनासिब समझो करो।

शेर : सुनिए, वह दूसरी बात तो आपने कही ही नहीं।

जिन्न : अब इस समय उसके कहने की कोई जरूरत नहीं मालूम पड़ती है, फिर देखा जायेगा।

इतना कह जिन्न तो वहाँ से रवाना हो गया और इन सभों को परेशानी की हालत में छोड़ गया। मायारानी और दारोगा की इस समय अजब हालत थी। मौत की भयानक सूरत उनकी आँखों के सामने दिखायी दे रही थी, तमाम बदन सनसना रहा था, सर में चक्कर आ रहे थे और पैरों में इतनी कमजोरी आ गयी कि खड़ा रहना मुश्किल हो गया था, यहाँ तक कि दोनों जमीन पर बैठ गये और अपनी बदकिस्मती का इन्तज़ार करने लगे।

जिन्न के चले जाने के बाद शेरअलीखाँ ने मायारानी की तरफ देखके कहा—

शेर : तूने तो केवल एक ही कलंक का टीका अपने माथे पर दिखाया था, जिस पर मैंने इसलिए विशेष ध्यान नहीं दिया कि तू मेरे दोस्त की लड़की है, मगर अब तो एक ऐसी बात मालूम हुई है, जिसने मुझे तड़पा दिया, मेरे कलेजे में दर्द पैदा कर दिया और रंजोगम का पहाड़ मेरे ऊपर डाल दिया। अफसोस, बलभद्रसिंह मेरा लंगोटिया दोस्त और लक्ष्मीदेवी मेरी मुँहबोली लड़की ! हाँ, राजा गोपालसिंह से मुझसे कोई ऐसा सरोकार

न था सिवाय इसके कि वह मेरे दोस्त का दामाद था। निःसन्देह यह सब काम इसी कमबख्त दारोगा की मदद से किया गया होगा!

मुन्दर : (खड़ी होकर) बड़े अफसोस की बात है कि तुमने एक मामूली आदमी की झूठी बातों पर विश्वास करके मेरी तरफ कुछ भी ध्यान न दिया और न अपनी तथा उसकी बर्बादी का ही कुछ ख्याल किया, जिसके साथ तुमने कई काम करने के लिए कसमें खायी थीं।

शेर : खैर, मैं थोड़ी देर के लिए तेरी बात मान लेता हूँ कि वह एक मामूली आदमी और झूठा भी था, मगर इस बात का पता लगाना कौन कठिन है कि इस वक्त इस किले के अन्दर बलभद्रसिंह है या नहीं।

मुन्दर : उस बनावटी जिन्न ने तुम्हें धोखा दिया, जब उसने देखा कि वह अकेले हमलोगों को गिरफ्तार नहीं कर सकता तो यह चालबाजी खेली, जिसमें तुम मेरे बाप बलभद्रसिंह का पता लगाने के लिए, जिसे मरे हुए एक जमाना बीत गया है, इस किलेवालों से मिलकर गिरफ्तार हो जाओ और अपने साथ हम लोगों को भी बर्बाद करो। अगर तुमको उसकी सचाई पर ऐसा ही दृढ़ विश्वास है, तो हम लोगों को इस किले के बाहर पहुँचा दो, और तब जो जी में आवे करो।

शेर : जब मुझे उसकी बातों पर विश्वास ही है तो तुझे यहाँ से राजी-खुशी के साथ क्यों जाने दूँगा, जिसने हजारों आदमियों को धोखे में डालकर बर्बाद किया और मुझे प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ दुश्मनी करने के लिए तैयार किया?

मुन्दर : तुमने मुफ्त में मेरा साथ देना स्वीकार नहीं किया, तुमने मेरे बाप बलभद्रसिंह की दोस्ती पर खयाल नहीं किया, बल्कि तुमने उस दौलत की लालच में पड़कर मेरा साथ दिया, जिसने तुम्हें अमीर ही नहीं, बल्कि जिन्दगी-भर के लिए लापरवाह कर दिया—मेरे बाप बलभद्रसिंह के साथ तुमको मुहब्बत थी, यह बात तो मैं तब समझूँ, जब मेरी दौलत मुझे वापस कर दो। यह भला कौन भलमनसी की बात है कि मेरी कुल जमा-पूँजी लेकर मुझे कंगाल बना दो, और अन्त में यों धोखा देकर बर्बाद करो!

शेर : (हँसकर) यह किसी बड़े भारी बेवकूफ का काम है कि अपने घर में आयी दौलत को फिर निकाल बाहर करे, तिस पर भी ऐसे नालायक की दौलत, जिसने एक नहीं बल्कि सैकड़ों खून किये हों!

मुन्दर : (क्रोध में आकर) तो क्या तुम अपने मन की ही करोगे?

शेर : बेशक!

मुन्दर : अच्छा तो मैं जाती हूँ, जो तुम्हारे जी में आवे करो।

शेर : ऐसा नहीं हो सकता।

इतना सुनते ही मायारानी ने तिलिस्मी खंजर कमर से निकाल लिया और शेरअलीखाँ की तरफ बढ़ा ही चाहती थी कि सामने के दरवाजे से आता हुआ, फिर वही जिन्न दिखायी पड़ा ।

जिन्न : (मायारानी की तरफ इशारा करके) इसके कब्जे से तिलिस्मी खंजर ले लेना मैं भूल गया था, क्योंकि जब तक यह खंजर इसके पास रहेगा, यह किसी के काबू में न आयेगी ।

यह कहकर उसने मायारानी की तरफ हाथ बढ़ाया और मायारानी ने वह खंजर उसके बदन के साथ लगा दिया, मगर उसे इसका असर कुछ भी न हुआ । जिन्न ने मायारानी के हाथ से खंजर छीन लिया तथा अँगूठी भी निकाल ली और इसके बाद फिर बाहर का रास्ता लिया ।

दारोगा और जितने आदमी वहाँ मौजूद थे, सब आश्चर्य और डर के साथ मुह देखते ही रह गये, कोई एक शब्द भी मुह से निकाल न सका ।

अब इस जगह हम पुनः थोड़ा-सा हाल उन ऐयारों का लिखना चाहते हैं, जो इस कमरे की छत पर बैठे सब तमाशा देख और सभी की बातें सुन रहे थे ।

शेरअलीखाँ को छोड़कर जब वह जिन्न कमरे के बाहर निकला तो उसी समय तेजसिंह छत के नीचे उतरे और इस फिक्र में आगे की तरफ बढ़े कि जिन्न का पीछा करें, मगर जब ये छिपते हुए सदर दरवाजे के पास पहुँचे, जिधर से वह जिन्न आया और फिर लौट गया था, तो उन्होंने और भी कई बातें ताज्जुब की देखीं । एक तो यह कि वह जिन्न लौटकर चला नहीं गया, बल्कि अभी तक छिपा हुआ दरवाजे के बगल में खड़ा है, और कान लगाकर सब बातें सुन रहा है, दूसरे यह कि जिन्न अकेला नहीं है, बल्कि उसके साथ एक आदमी और भी है, जो स्याह नकाब से अपने को छिपाये हुए और हाथ में एक नंगी तलवार लिये है । जब यह जिन्न दोहराकर कमरे के अन्दर गया और मायारानी से तिलिस्मी खंजर छीनकर फिर बाहर चला आया तो अपने साथी को लिये हुए बाग की तरफ चला, और कुछ दूर जाने के बाद अपने साथी से बोला, "आओ भूतनाथ, अब तुमको फिर उसी कैदखाने में छोड़ आवें, जिसमें राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने तुम्हें कैद किया था, और उसी तरह हथकड़ी-बेड़ी तुम्हें पहिरा दें, जिसमें उन लोगों को इस बात का गुमान भी न हो कि भूतनाथ को कोई छुड़ा ले गया था !"

भूतनाथ : बहुत अच्छा, मगर यह तो कहिए कि अब मेरी क्या दशा होगी ?

जिन्न : दशा क्या होगी ? मैं तो कह ही चुका कि तुम हर तरह से बेफिक्र रहो, ठीक समय पर मैं तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा ।

भूतनाथ : जैसे आपकी मर्जी, मगर मैं समझता हूँ कि राजा बीरेन्द्रसिंह के आने में अब विलम्ब नहीं और उनके आने के साथ ही मेरा मुकदमा पेश हो जायगा।

जिन्न : क्या हर्ज है, मुझे तुम हर वक्त अपने पास मौजूद समझो और बेफिक्र रहो।

भूतनाथ : जो मर्जी।

तेजसिंह ने जो छिपे हुए उन दोनों के पीछे जा रहे थे, ये बातें भी सुन लीं और उन्हें हद से ज्यादे आश्चर्य हुआ। जिन्न और भूत दोनों उस मकान के पास पहुँचे, जिसकी छत फोड़ी गयी थी, और जो तिलिस्मी तहखाने के अन्दर जाने का दरवाजा था। भूतनाथ ने कमन्द लगायी और उसी के सहारे जिन्न तथा भूतनाथ उसके ऊपर चढ़ गये, और टूटी हुई छत की राह से अन्दर उतर गये। तेजसिंह ने भी उसके अन्दर जाने का इरादा किया, मगर फिर कुछ सोचकर लौट आये, और उसी कमरे की छत पर चले गये, जहाँ अपने साथियों को छोड़ा था।

अब हम पुनः कमरे के अन्दर का हाल लिखते हैं। जब मायारानी से तिलिस्मी खंजर छीनकर वह जिन्न कमरे के बाहर चला गया तो माया-रानी बहुत ही डरी और जिन्दगी से नाउम्मीद होकर सोचने लगी कि अब जान बचनी मुश्किल है, बड़ी नादानी की जो यहाँ आयी, भाग निकलने पर भी धनपतवाली करोड़ों रुपये की जमा मेरे हाथ में थी। अगर चाहती या आज के दिन की खबर होती तो किसी और मुल्क में चली जाती और जिन्दगी-भर अमीरी के साथ आनन्द करती। मगर दुश्मनी की डाह में वह भी न होने पाया, असम्भव बातों की लालच में पड़कर शेरअलीखाँ के घर में वह सब माल रख दिया, और उस स्वार्थी और मतलबी ने ऐसे समय में मेरे साथ दगा की। अब क्या किया जाय? मैं कहीं की भी न रही। एक तो अब मुझे बचने की आशा ही नहीं रही, फिर अगर मान भी लिया जाय कि पहिले की तरह यदि अब भी राजा गोपालसिंह मुझे छोड़ देंगे तो मैं कहाँ जाकर रहूँगी, और किस तरह अपनी जिन्दगी बिताऊँगी? हाय इस समय मेरा मददगार कोई भी नहीं दिखायी देता!

मायारानी इन सब बातों को सोच रही थी और शेरअलीखाँ क्रोध में भरा हुआ लाल आँखों से उसे देख रहा था कि यकायक कई आदमियों के आने की आहट पाकर वे दोनों चौंके और दरवाजे की तरफ घूम गये। हमारे बहादुर ऐयारों पर नजर पड़ी और सब-के-सब आश्चर्य से उनकी तरफ देखने लगे।

सुबह की सुफेदी ने रात की स्याही को धोकर अपना रंग इतना जमा

लिया था कि बाग के हरएक गुलबूटे साफ-साफ दिखायी देने लग गये थे, जब तेजसिंह, देवीसिंह, भैरोसिंह और तारासिंह कमरे की छत पर से नीचे उतरे और शेरअली, मायारानी और उनके आदमियों के सामने जा खड़े हुए।

तेजसिंह ने मुस्कुराते हुए मायारानी की तरफ देखा और आगे की तरफ बढ़कर कहा—

केवल राजा गोपालसिंह ही ने नहीं, बल्कि हम लोगों ने भी उनकी आज्ञा पाकर इसलिए कई दफे तुझे छोड़ दिया था कि देखें न्यायी ईश्वर तुझे तेरे पापों का फल क्या देता है, मगर ईश्वर की मर्जी का पता लग गया। वह नहीं चाहता कि तू एक दिन भी आराम के साथ कहीं रह सके, और हम लोगों के सिवाय किसी दूसरे या गैर पर अपनी जिन्दगी की आखिरी नजर डाले। केवल तू ही नहीं (दारोगा की तरफ देखकर) इस नकटे की बदकिस्मती भी इसे किसी दूसरी जगह जाने नहीं देती, और घुमा-फिराकर घर बैठे हम लोगों के सामने ले आती है। हाँ, यह एक (शेरअली-खाँ की तरफ देखके) नये बहादुर हैं, जो हम लोगों के साथ दुश्मनी करने के लिए तैयार हुए हैं।

शेर : (हाथ जोड़कर) नहीं नहीं, मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं आप लोगों के साथ दुश्मनी का बर्ताव नहीं रक्खा चाहता, और न मुझमें इतनी सामर्थ्य है। मुझे तो इस बदकार ने धोखा दिया। मुझे इसका असल हाल मालूम न था। बहुतों से सुन चुका हूँ कि आप लोग बड़े बहादुर और दिल खोल के खैरात देनेवाले हैं, इसलिए भीख के ढंग पर अपने उन कसूरों की माफी माँगता हूँ, जो इस वक्त तक कर चुका हूँ।

तेज : अगर तुम्हारा दिल साफ है, और आगे कसूर करने का इरादा नहीं है, तो हमने माफ किया। अच्छा आओ और इन दोनों बदकारों को लिये हुए हमारे साथ चलो। हाँ, यह तो बताओ कि ये पाँचों आदमी तुम्हारे हैं, या इस दारोगा के हैं ?

शेर : जी हाँ, ये पाँचों आदमी मेरे ही हैं।

तेज : और भी तुम्हारा कोई आदमी इस बाग में आया या आनेवाला है ?

शेर : जी नहीं, मगर थोड़ी-सी फौज इस पहाड़ी के नीचे नदी किनारे मौजूद है जिसका···

तेज : (बात काटकर) उसका हाल हमें मालूम है, खैर, देखा जायगा, तुम हमारे साथ आओ।

तेजसिंह की आज्ञानुसार सब-के-सब कमरे के बाहर निकले। माया-

रानी और दारोगा के लिए इस वक्त मौत का सामान था, मगर लाचार कोई बस नहीं चल सकता था और न वे दोनों यहाँ से भाग ही सकते थे। तेजसिंह ने भैरोसिंह को कुछ समझाकर उसी बाग में छोड़ दिया। और बाकी सभों को साथ लिये हुए अपने स्थान का रास्ता लिया। रास्ते में शेरअलीखाँ से यों बातचीत होने लगी—

तेज : आज की रात केवल हम लोगों के लिए नहीं, बल्कि तुम्हारे लिए भी अनूठी ही रही।

शेर : बेशक ऐसा ही है, जिस राह से मैं इस बाग में आया हूँ और यहाँ आकर जोकुछ देखा, जन्म-भर याद रहेगा। मैं निश्चिन्त होने पर सब हाल आपसे कहूँगा, आप भी सुनकर आश्चर्य करेंगे।

तेज : हमे सब हाल मालूम है। रास्ते के बारे में हम लोगों के लिए कोई नयी बात नहीं है, क्योंकि जिस तहखाने की राह से तुम लोग आये हो, उसी राह से हम लोग कई दफे आ चुके हैं, बाकी रही जिन्नवाली बात, सो वह भी हम लोगों से छिपी नहीं है।

शेर : (ताज्जुब से) क्या आप लोग बहुत देर से यहाँ आये हुए थे ?

तेज : देरी से ! बल्कि हमारे सामने तुम इस बाग में आये हो। हाँ, तुम्हारे पाँचों नौकर पहिले आ चुके थे, बल्कि यों कहना चाहिए कि उन्हीं के आने की खबर पाकर हम लोग आये थे।

शेर : आप लोग हम लोगों को कहाँ से देख रहे थे ?

तेज : सो नहीं कह सकते, मगर कोई मामला ऐसा नहीं हुआ, जिसे हमलोगों ने न देखा हो या, जिसे हमलोग न जानते हों। (मायारानी और दारोगा की तरफ इशारा करके) हम लोगों का सामना होने के पहिले तक ये दोनों कमबख्त सोचते होंगे कि जिन्न ने पहुँचकर काम में बाधा डाल दी नहीं तो कमरे की जमीन खुद जाती और सुरंग की राह से तुम्हारी फौज यहाँ पहुँचकर किले को दखल कर लेती।

शेर : बेशक, ऐसा ही है और मैं भी इसका पक्ष लिये ही जाता अगर उस जिन्न ने, चाहे वह कोई भी हो, मुझे कह न दिया होता कि 'यह माया-रानी असल में तुम्हारे दोस्त की लड़की लक्ष्मीदेवी नहीं है, बल्कि तुम्हारे दोस्त के दुश्मन हेलासिंह की लड़की मुन्दर है'।

तेज : मगर यह खयाल झूठा था, क्योंकि तुम्हारी फौज के आने की खबर हमलोगों को मिल चुकी थी, और हमलोग उसके रोकने का बन्दो-बस्त कर चुके थे। केवल इतना ही नहीं, बल्कि तुम्हारी फौज के सेनापति महबूबखाँ को हमारे एक ऐयार ने गिरफ्तार करके पहर रात जाने के पहिले ही इस किले में पहुँचा भी दिया था।

शेर : (आश्चर्य से) तो क्या महबूबखाँ यहाँ कैद है ?

तेज : बेशक !

शेर : ओफ, आप लोगों के साथ दुश्मनी करना आप ही अपनी मौत को बुलाना है !

तेज : (मायारानी की तरफ देखके) बड़ी खुशी की बात है कि आज तुम अपनी दोनों नालायक बहिनों को भी इसी महल के अन्दर देखोगी।

मायारानी ने इसका जवाब कुछ भी न दिया और सिर झुका लिया, मगर भीतर से उसका रंज और भी बढ़ गया, क्योंकि कमलिनी तथा लाडिली के यहाँ होने की खबर उसे बहुत बुरी मालूम हुई।

तेजसिंह सभों को लिये अपने कमरे में पहुँचे। शेरअलीखाँ के लिए एक मकान का बन्दोबस्त किया गया, दारोगा को कैदखाने की अँधेरी कोठरी नसीब हुई, और कमलिनी की इच्छानुसार मायारानी कैदियों की सूरत में महल के अन्दर पहुँचायी गयी।

नौवाँ बयान

दिन पहर-भर से ज्यादे चढ़ चुका है। रोहतासगढ़ के महल में एक कोठरी के अन्दर, जिसके दरवाजे में लोहे के सींखचे लगे हुए हैं, मायारानी सिर नीचा किये हुए गर्म-गर्म आँसुओं की बूँदों से अपने चेहरे की कालिख धोने का उद्योग कर रही है, मगर उसे इस काम में सफलता नहीं होती। दरवाजे के बाहर सोने की पीढ़ियों पर, जिन्हें बहुत-सी लौंडियाँ घेरे हुई हैं, कमलिनी, किशोरी, कामिनी, लाडिली, लक्ष्मीदेवी और कमला बैठी हुई मायारानी पर बातों के अमोघ बान चला रही हैं।

किशोरी : (कमलिनी से) तुम्हारी बहिन मायारानी है बड़ी खूबसूरत !

कमला : केवल खूबसूरत ही नहीं, भोली और शर्माऊ भी हद से ज्यादे है, देखिए सिर ही नहीं उठाती बात करना तो दूसरी बात है।

कामिनी : इन्हीं गुणों ने तो राजा गोपालसिंह को लुभा लिया था।

कमलिनी : मगर मुझे इस बात का बहुत रंज है कि ऐसी नेक बहिन की सोहबत में ज्यादे दिन तक रह न सकी।

किशोरी : बेशक, इसका रंज तुम्हें और लाडिली को भी होना चाहिए।

कमला : जो हो, मगर एक छोटी-सी भूल तो मायारानी से भी हो गयी।

कामिनी : वह क्या ?

कमलिनी : यही कि राजा गोपालसिंह को इन्होंने कोठरी में बन्द करके कैदियों की तरह रख छोड़ा था।

किशोरी : इसका कोई-न-कोई सबब तो जरूर ही होगा। मैंने सुना है कि राजा गोपालसिंह इधर-उधर आँखें बहुत लड़ाया करते थे, यहाँ तक कि धनपति नामी एक वेश्या को अपने घर के अन्दर डाल रक्खा था। (मायारानी से) क्यों बीबी, यह बात सच है ?

लक्ष्मीदेवी : ये तो बोलतीं ही नहीं, मालूम होता है हम लोगों से कुछ खफा हैं।

कमला : हम लोगों ने इनका क्या बिगाड़ा है, जो हम लोगों से खफा होंगी, हाँ, अगर तुमसे रंज हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं, क्योंकि तुम मुद्दत तक तो तारा के भेष में रहीं, और आज लक्ष्मीदेवी बनकर इनका राज्य छीनना चाहती हो। बीबी चाहे जो हो, मैं तो महाराज के सामने जरूर इन्हीं की सिफारिश करूँगी, तुम चाहे भला मानो, चाहे बुरा।

कामिनी : तुम भले ही सिफारिश कर लो, मगर राजा गोपालसिंह के दिल को कौन समझावेगा ?

कमला : उन्हें भी मैं समझा लूँगी कि आदमी से भूल-चूक हुआ ही करती है, ऐसे छोटे-छोटे कसूरों पर ध्यान देना भले आदमियों का काम नहीं है, देखो बेचारी ने कैसी नेकनामी के साथ उनका राज्य इतने दिनों तक चलाया।

किशोरी : गोपालसिंह तो बेचारे भोले-भाले आदमी ठहरे, उन्हें जो-कुछ समझा दोगी समझ जाँयगे, मगर ये तारारानी मानें तब तो ! ये जो हक-नाहक लक्ष्मीदेवी बनकर बीच में कूदी पड़ती हैं और इस बेचारी भोली औरत पर जरा रहम नहीं खातीं !!

लक्ष्मीदेवी : अच्छा रानी लो मैं वादा करती हूँ कि कुछ न बोलूँगी, बल्कि धनपति को छुड़वा देने के लिए भी उद्योग करूँगी, क्योंकि मुझे भी इस बेचारी पर दया आती है।

कमला : हाँ, देखो तो सही राजा गोपालसिंह की जुदाई में कैसा बिलख-बिलखकर रो रही है, कमबख्त मक्खियाँ भी ऐसे समय में इसके साथ दुश्मनी कर रही हैं। किसी से कहो नारियल का चँवर लाकर इसकी मक्खियाँ तो झले।

किशोरी : इस काम के लिए तो भूतनाथ को बुलाना चाहिए।

कमला : इस बारे में तो मैं खुद शर्माती हूँ।

इतना सुनते ही सब-की-सब मुस्कुरा पड़ीं और कमलिनी तथा लक्ष्मी-

देवी ने मुहब्बत की निगाह से कमला को देखा।

लक्ष्मीदेवी : मेरा दिल गवाही देता है कि भूतनाथ का मुकदमा एकदम से पलट जायगा।

कमलिनी : ईश्वर करे ऐसा ही हो, बल्कि मैं तो चाहती हूँ कि माया-रानी का मुकदमा भी एकदम से औंधा हो जाय और तारा बहिन तारा की तारा ही बनी रह जाय।

ये सब बड़ी देर तक बैठी हुई मायारानी के जख्मों पर नमक छिड़कती रहीं, और न मालूम कितनी देर तक बैठी रहतीं, अगर इनके कामों में यह खुशखबरी न पहुँचती कि राजा बीरेन्द्रसिंह की सवारी इस किले में दाखिल हुआ ही चाहती है।

दसवाँ बयान

आज रोहतासगढ़ किले के अन्दर राजा बीरेन्द्रसिंह की सवारी आयी है, जिससे यहाँ की रिआया बहुत ही प्रसन्न है। छोटे-छोटे बच्चे भी उनके आने की खुशी में मग्न हो रहे हैं। इसका सबब यही है कि राजा बीरेन्द्रसिंह जब जहाँ रहते हैं, खैरात का दरवाजा वहाँ खुला रहता है। यों तो जहाँ इनकी अमलदारी है, बराबर खैरात हुआ ही करती है, मगर जहाँ ये स्वयं मौजूद रहते हैं, खैरात ज्यादे हुआ करती है। खैरात का मकान और बन्दोबस्त अलग है। कोई आदमी वापस नहीं जाने पाता, और जिसको जिस चीज की जरूरत होती है, दी जाती है। तीन वर्ष से ऊपर और बारह वर्ष से कम उम्रवाले लड़कों को मिठाई बाँटने का हुक्म है, और तीन वर्ष से कम उम्र-वाले बच्चों को चीनी के खिलौने बाँटे जाते हैं। चीनी के खिलौने, मिठाइयाँ और साथ ही इसके कपड़ों का बाँटना तभी तक जारी रहता है, जब तक राजा बीरेन्द्रसिंह स्वयं मौजूद रहते हैं, और अन्न तो हमेशा बँटा करता है। यही सबब है कि आज रोहतासगढ़ के छोटे-छोटे बच्चों को भी हद से ज्यादे खुशी चढ़ी हुई है, और वे झुण्ड-के-झुण्ड इधर-उधर घूमते दिखायी दे रहे हैं।

आज यह खबर बहुत अच्छी तरह मशहूर हो रही कि मायारानी नामी एक औरत और 'दारोगा बाबा' नामी एक मर्द इस किले में गिरफ्तार हुए हैं, जो बीरेन्द्रसिंह के दुश्मन हैं और भूतनाथ नामी कोई ऐयार गिरफ्तार किया गया है, जिसका मुकदमा फैसला करने के लिए राजा साहब स्वयं आये हैं। ये खबरें किसी एक ढंग पर मशहूर नहीं हैं, बल्कि तरह-तरह का पलेथन लगाकर लोग इनकी चर्चा कर रहे हैं, और राजा बीरेन्द्रसिंह के

दुश्मनों को जी-जान से गालियाँ दे रहे हैं।

राजा बीरेन्द्रसिंह के आने के साथ ही उनके ऐयारों ने एक-एक करके वे कुल बातें बयान कर दीं, जो आज के पहिले हो चुकी थीं, और जिन्हें राजा बीरेन्द्रसिंह नहीं जानते थे। भूतनाथ का हाल सुनकर उन्हें बड़ा ही रंज हुआ, क्योंकि कमला को वे अपनी लड़की की तरह प्यार करते थे। खैर, सब बातों को सुन-सुनाकर राजा बीरेन्द्रसिंह महल में गये और कमलिनी, लाडिली और कमला इत्यादि से इस तरह मिले, जैसे बड़े लोग अपनी लड़कियों और भतीजियों से मिला करते हैं, और उन सभों ने भी वैसी ही मुहब्बत और इज्जत का बरताब किया, जैसा नेकचलन लड़कियाँ, अपने बाप और चाचा के साथ करती हैं।

सभों को प्यार और दिलासा कर राजा बीरेन्द्रसिंह बाहर आये, और आज का दिन तेजसिंह से सलाह-विचार करने में बिताया। दूसरे दिन दोपहर के बाद शेरअलीखाँ से मुलाकात की और घण्टे-भर रात जाने बाद भूतनाथ का मुकदमा सुनने का विचार प्रकट करके कहा कि मायारानी तथा दारोगा का मुकदमा भूतनाथ के मुकदमे के बाद सुना जायगा।

राजा बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से यह भी कह दिया कि भूतनाथ का मुकदमा महल के अन्दर सुना जायगा, और उस समय हमारे ऐयारों के सिवाय यहाँ किसी गैर के रहने की जरूरत नहीं है। औरतों में भी सिवाय लड़कियों के जो चिक के अन्दर बैठायी जाँयगी, कोई लौंडी इतना नजदीक न रहने पावे कि हम लोगों की बातें सुने, और बलभद्रसिंह की गद्दी हमारे पास ही बिछायी जाय।

हमारे पाठक सवाल कर सकते हैं कि जब मुकदमा सुनने के समय ऐयारों के सिवाय किसी गैर आदमी के मौजूद रहने की मनाही कर दी गयी तो किशोरी, कमलिनी और लक्ष्मीदेवी इत्यादि को पर्दे के अन्दर बैठने की क्या जरूरत थी? इसका जवाब यह हो सकता है कि ताज्जुब नहीं राजा बीरेन्द्रसिंह ने सोचा हो कि जिस समय भूतनाथ का मुकदमा सुना जायगा और उसके ऐबों की पोटलियाँ खोलने के साथ-साथ सबूत की चीठियाँ अर्थात् वह जन्मपत्री पढ़ी जायगी, जो बलभद्रसिंह ने दी है, तो बेशक लड़कियों के दिल पर चोट बैठेगी, और उनके चेहरे तथा अंगों से उनकी अवस्था अवश्य प्रकट होगी, कौन ठिकाना कोई चीख उठे, कोई बदहवास हो के गिर पड़े, या किसी से किसी तरह की बेअदबी हो जाय तो यह अच्छी बात न होगी। बड़ों के सामने अनुचित काम बेबसी की अवस्था में हो जाने से दिल को रंज पहुँचेगा, और यदि ऐसा न भी हुआ तो भी दिल की अवस्था छिपाने के लिए उन्हें बहुत उद्योग करना पड़ेगा, तथा उनके नाजुक कलेजे को

तकलीफ पहुँचेगी, जिससे वह लज्जित होंगी। इससे इन लोगों का परदे के अन्दर ही बैठना उचित होगा। बेशक, यही बात है और बड़ों को ऐसा ख्याल होना ही चाहिए।

रात पहर-भर से ज्यादे जा चुकी है। महल के एक छोटे से मगर दोहरे दालान में रोशनी अच्छी तरह हो रही है। दालान के पहिले हिस्से में बारीक चिक का परदा गिरा हुआ है, और भीतर पूरा अन्धकार है। किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, लाडिली और कमला उसी के अन्दर बैठी हुई हैं। बाहरी हिस्से में, जिसमें रोशनी बखूबी हो रही है, राजा बीरेन्द्रसिंह की गद्दी लगी हुई है, उनके बगल में बलभद्रसिंह बैठे हुए हैं, दूसरे बगल में कागजों की गठरी लिये हुए तेजसिंह विराजमान हैं, और बाकी के ऐयार लोग (भैरोसिंह को छोड़ के) दोनों तरफ दिखायी दे रहे हैं, तथा सभी की निगाहें सामने के मैदान पर पड़ रही हैं, जिधर से हथकड़ी-बेड़ी से मजबूर भूतनाथ को लिये हुए देवीसिंह चले आ रहे हैं।

भूतनाथ ने आने के साथ ही झुककर राजा बीरेन्द्रसिंह को सलाम किया और कहा—

भूतनाथ : व्यर्थ ही बात का बतंगड़ बनाकर मुझे साँसत में डाल रक्खा गया है, मगर भूतनाथ ने भी जिसने आप लोगों को खुश रखने के लिए कोई बात उठा नहीं रक्खी, इस बात का प्रण कर लिया था कि जब तक राजा बीरेन्द्रसिंह का सामना न होगा, अपने मुकद्दमे की उलझन को खुलने न दूँगा।

बीरेन्द्र : बेशक, इस बात का मुझे भी बहुत रंज है कि उस भूतनाथ के ऊपर एक भारी जुर्म ठहराया गया है, जिसकी कार्रवाइयों को सुन-सुनकर हम खुश होते थे, और जिसे मुहब्बत की निगाह से देखने की अभिलाषा रखते थे।

भूतनाथ : अगर महाराज को इस बात का रंज है, तो महाराज निश्चय रक्खें कि भूतनाथ महाराज की नजरों से दूर किये जाने लायक साबित न होगा। (इधर-उधर और पीछे की तरफ देख के) मगर अफसोस, हमारा मददगार अभी तक नहीं पहुँचा, न मालूम कहाँ अटक रहा !

इतने में सामने की तरफ से वही जिन्न आता हुआ दिखायी पड़ा, जिसे तेजसिंह पहिले देख चुके थे और जिसका हाल राजा बीरेन्द्रसिंह से भी कह चुके थे। इस जिन्न की चाल आजाद, बेफिक्र और निडर लोगों की-सी थी, जो धीरे-धीरे चलकर उसी दालान में आ पहुँचा, और चुपचाप एक किनारे खड़ा हो गया।

उसके रंग-ढंग और उसकी पोशाक का हाल हम एक जगह बयान कर

आये हैं, इसलिए पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। यद्यपि जिन्न आश्चर्यजनक रीति से यकायक वहाँ आ पहुँचा था, और उसको इस बात का गुमान था कि हमारा आना लोगों को बड़ा ही आश्चर्यजनक मालूम होगा, मगर ऐसा न था क्योंकि तेजसिंह को इस बात की खबर पहिले ही दिन हो चुकी थी, जब वे जिन्न और भूतनाथ के पीछे-पीछे जाकर उनकी बातें सुन आये थे, और तेजसिंह ने यह हाल राजा बीरेन्द्रसिंह, अपने साथियों और कमलिनी, लक्ष्मीदेवी वगैरह से भी कह दिया था, अतएव जिन्न के आने का सब कोई इन्तजार ही कर रहे थे, और जब वह आ गया, तो उसकी सूरत गौर से देखने लगे। बीरेन्द्रसिंह का इशारा पाकर देवीसिंह ने उस जिन्न से पूछा—

देवी : महाराज की इच्छा है कि तुम अपना नाम और यहाँ आने का सबब बताओ।

जिन्न : मेरा नाम कृष्णाजिन्न है और मैं भूतनाथ का विचित्र मुकद्दमा सुनने तथा अपने एक पुराने मित्र से मिलने आया हूँ।

देवी : (आश्चर्य से) क्या भूतनाथ के अतिरिक्त कोई दूसरा आदमी भी तुम्हारा मित्र है ?

जिन्न : हाँ।

देवी : और वह है कहाँ ?

जिन्न : इसी जगह, आप लोगों के बीच ही में।

देवी : अगर ऐसा है तो तुम उसे अपने पास बुलाओ और बातचीत करो।

जिन्न : इससे आपको कोई मतलब नहीं, जब मौका आवेगा, ऐसा किया जायगा।

देवी : ताज्जुब है कि तुम किसी का कुछ ख्याल न करके बेअदबी के साथ बातचीत करते हो ! क्या हम लोगों के साथ तुम्हें किसी तरह की दुश्मनी या रंज है ? या दुश्मनी पैदा किया चाहते हो ?

जिन्न : दुश्मनी बिना डाह, डर और रंज के पैदा नहीं होती और हमारे में ये तीनों बातें छू नहीं गयी हैं। न तो हमें किसी का डर है, न किसी को डराने की इच्छा है, न किसी को कुछ देते हैं, और न किसी से कुछ चाहते हैं, न कोई हमारा कुछ बिगाड़ सकता है, न हम किसी का कुछ बिगाड़ते हैं, न हमें किसी बात की कमी है, न लालसा है, फिर ऐसी अवस्था में किसी से दुश्मनी या रंज की नौबत हो भी क्योंकर सकती है ? अस्तु, आप लोगों को यही चाहिए कि हमारा खयाल छोड़कर अपना काम करें और हमारा होना-न-होना एक बराबर समझें।

जिन्न की बातों से सभों को बड़ा ही आश्चर्य और रंज हुआ, बल्कि हमारे कई ऐयारों को क्रोध भी चढ़ आया, मगर राजा बीरेन्द्रसिंह का इशारा पाकर सभों को चुप और शान्त होना ही पड़ा। बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की तरफ देखकर भूतनाथ का मुकदमा शुरू करने के लिए कहा और तेजसिंह ने ऐसा ही किया।

तेजसिंह ने भूमिका के तौर पर थोड़ा-सा पिछला हाल कहकर वह गठरी खोली, जिसमें पीतल की एक सन्दूकड़ी और कागज का एक मुट्ठा था, जिसमें की चीठियाँ कमलिनी वगैरह के सामने पढ़ी जा चुकी थीं। तेजसिंह उन चीठियों को पढ़ गये, जिनका हाल हमारे पाठकों को मालूम हो चुका है, और इसके बाद अगली चीठी पढ़ने का इरादा किया, मगर जिन्न ने उसी समय टोक दिया, और कहा, "यदि महाराज साहब उचित समझें तो दारोगा और मुन्दर को भी जिसने अपने को मायारानी के नाम से मशहूर कर रक्खा है, और जो इस समय सरकार के कब्जे में हैं, इसी जगह बुलवा लें और चीठियों को उनके सामने पुनः पढ़ने की आज्ञा दें। यद्यपि यहाँ पर शेरअली-खाँ के आने की भी आवश्यकता है, परन्तु मौके-मौके पर कई बातें ऐसी प्रकट होंगी, जिनका हाल शेरअलीखाँ को मालूम होने देना हम उचित नहीं समझते।"

यद्यपि जिन्न ने बेमौके टोक दिया था और राजा बीरेन्द्रसिंह तथा हमारे ऐयारों को इस बात का रंज होना चाहिए था, मगर ऐसा नहीं हुआ, बल्कि सभों ने जिन्न की बात पसन्द की और महाराज ने मायारानी को हाजिर करने का हुक्म दिया। तारासिंह गये और थोड़ी ही देर में माया-रानी और दारोगा को इस तरह लिये हुए आ पहुँचे, जिस तरह अपनी जान से हाथ धोये और जिद्दी कैदियों को घसीटते हुए लाना पड़ता है। जिस समय मुन्दर वहाँ आयी, उसने घबराहट के साथ चारों तरफ देखा। सबसे ज्यादे देर तक उसकी निगाह, जिस पर अड़ी रही, वह बलभद्रसिंह था, और बलभद्रसिंह ने भी मायारानी को बड़े गौर से देर तक देखा। जिन्न ने इस समय पुनः टोका और राजा बीरेन्द्रसिंह से कहा, "आशा है कि हमारे होशियार और नीतिकुशल महाराज मुन्दर और बलभद्रसिंह की आँखों को बड़े ध्यान और गूढ़ विचार से देख रहे होंगे।"

जिन्न की इस बात ने होशियारों और बुद्धिमानों के दिल में एक नया ही रंग पैदा कर दिया, और तेजसिंह तथा बीरेन्द्रसिंह ने मुस्कुराते हुए जिन्न की तरफ देखा। इसी समय भैरोसिंह भी आ पहुँचे, जिन्हें तेजसिंह कुछ समझा-बुझाकर आज दो दिन हुए बाग के उस हिस्से में छोड़कर आये थे, जिसमें मायारानी गिरफ्तार की गयी थी। भैरोसिंह के हाथ में एक छोटा-

सा पुर्जा था, जिसे उन्होंने तेजसिंह के हाथ में रख दिया, और तब मुस्कुराते हुए जिन्न की तरफ देखा। भैरोसिंह को देख जिन्न के दाँत भी हँसी से दिखायी दे गये, मगर उसने अपने को रोका और भैरोसिंह की तरफ से मुँह फेर लिया। तेजसिंह ने इस पुर्जे को पढ़ा और हँसकर राजा बीरेन्द्रसिंह के हाथ में दे दिया। राजा बीरेन्द्रसिंह भी पढ़कर हँस पड़े और जिन्न तथा भैरोसिंह की तरफ देखने लगे।

इस समय सभों की इच्छा यह जानने की हो रही थी कि भैरोसिंह ने जो पुर्जा तेजसिंह को दिया, उसमें क्या लिखा हुआ था, और राजा बीरेन्द्रसिंह उसे पढ़कर और जिन्न की तरफ देखकर क्यों हँस पड़े? और इसी तरह जिन्न भैरोसिंह को और भैरोसिंह जिन्न को देखकर क्यों हँसे? मगर इसका असल भेद किसी को मालूम न हुआ और न कोई पूछ ही सका।

जिस समय जिन्न ने मायारानी और बलभद्रसिंह की देखादेखी के बारे में आवाज कसी, उस समय मायारानी ने बलभद्रसिंह की तरफ से आँखें फेर लीं, मगर बलभद्रसिंह केवल आँख बचाकर चुप न रह गया, बल्कि उसने क्रोध में आकर जिन्न से कहा—

बलभद्रसिंह : एक तो तुम बिना बुलाये यहाँ पर चले आये, जहाँ आपुस की गुप्त बातों का मामला पेश है, दूसरे तुमसे जोकुछ पूछा गया, उसका जवाब तुमने बेअदबी और ढिठाई के साथ दिया, तीसरे अब तुम बात-बात पर टोका-टाकी करने और आवाज कसने लगे! आखिर कोई कहाँ तक बरदाश्त करेगा? तुम हम लोगों की बातों में बोलने वाले कौन?

जिन्न : (क्रोध और जोश में आकर) हमें भूतनाथ ने अपना मुख्तार बनाया है, इसलिए हम इस मामले में बोलने का अधिकार रखते हैं। हाँ, यदि राजा साहब हमें चुप रहने की आज्ञा दें तो हम अपनी जुबान बन्द कर सकते हैं। (कुछ रुककर) मगर मैं अफसोस के साथ कहता हूँ कि क्रोध और खुदगर्जी ने तुम्हारी बुद्धि के आईने को गँदला कर दिया है और निर्लज्जता की सहायता से तुम बोलने में तेज हो गये हो, इतना भी नहीं सोचते कि इतने बड़े रोहतासगढ़ किले के अन्दर, बल्कि महल के बीच में जो बेखौफ घुस आया है, वह किसी तरह की ताकत भी रखता होगा या नहीं! (राजा बीरेन्द्रसिंह और ऐयारों की तरफ इशारा करके) जो ऐसे-ऐसे बहादुरों और बुद्धिमानों के सामने बिना बुलाये आने पर भी ढिठाई के साथ वादाविवाद कर रहा है, वह किसी तरह की कुदरत भी रखता होगा, या नहीं! मैं खूब जानता हूँ कि नेक, ईमानदार, निर्लोभ और लापरवाह आदमी को राजा बीरेन्द्रसिंह ऐसे बहादुर और तेजसिंह ऐसे चालाक आदमी भी कुछ नहीं कह सकते, तुम्हारे ऐसों की तो हकीकत ही क्या, जिसने बेईमानी,

लालच, दगाबाजी और बेशर्मी के साथ-ही-साथ पाप की भारी गठरी अपने सिर पर उठा रक्खी है, और उसके बोझ में घुटने तक जमीन के अन्दर गड़ा हुआ है। मैं इस बात को भी खूब समझता हूँ कि मेरी इस समय की बात-चीत लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली को जो इस पर्दे के अन्दर बैठी हुई सबकुछ देख-सुन रही हैं, बहुत बुरी मालूम होती होगी, मगर उन्हें धीरज के साथ देखना चाहिए कि हम क्या करते हैं। हाँ, मुझे अभी बहुत-कुछ कहना है, और मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि तुमने लज्जा से सिर झुका लेने के बदले में बेशर्मी अख्तियार कर ली है, और जिस तरह अबकी दफे टोका है, उसी तरह आगे भी बात-बात में मुझे टोकने का इरादा कर लिया है, मगर खूब समझ रक्खो कि राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों की बातें मैं इसलिए सह लूँगा कि ये लोग किसी के साथ सिवाय भलाई के बुराई करनेवाले नहीं हैं, जब तक कोई कमबख्त इन लोगों को व्यर्थ न सतावे, और ये नेक तथा बद को पहिचानने की भी बुद्धि रखते हैं, मगर तुम्हारे ऐसे बेईमान और पापी की बातें मैं सह नहीं सकता। भूतनाथ पर एक भारी इल्जाम लगाया गया है, और भूतनाथ का मैं मुख्तार हूँ, इससे मेरी इज्जत में कमी नहीं आ सकती। तुम लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली के बाप बन-कर अपने को बराबरी का दर्जा दिया चाहते हो, मगर ऐसा नहीं हो सकता, अगर भूतनाथ दोषी है, तो तुम भी मुँह दिखाने के लायक नहीं हो, समझ रक्खो और खूब समझ रक्खो कि चाहे आज हो या दो दिन के बाद हो भूतनाथ की इज्जत तुमसे बढ़ी ही रहेगी! (भूतनाथ की तरफ देखकर) क्यों जी भूतनाथ, तुम क्यों इससे दबे जाते हो? तुम्हें किस बात का डर है।

भूतनाथ : (पीतल की सन्दूकड़ी की तरफ इशारा करके) बस केवल इसी का डर है, और इस कागज के मुट्ठे को तो मैं कुछ भी नहीं समझता, इसकी इज्जत तो मेरे सामने इतनी ही हो सकती है, जितनी आज के दिन मायारानी की उस चीठी की होती, जो वह अपने हाथ से लिखकर राजा गोपालसिंह के सामने इस नीयत से रखती कि उसका कसूर माफ किया जाय, और लक्ष्मीदेवी का खयाल कुछ न करके, वह पुनः राजा गोपालसिंह की रानी बनायी जाय।

जिन्न : निःसन्देह ऐसा ही है, और इसी सन्दूकड़ी के सबब से बलभद्र-सिंह तुम्हारे सामने ढिठाई कर रहा है। अच्छा इस सन्दूकड़ी का जादू दूर करने के लिए इसी के पास मैं एक तिलिस्मी कलमदान रखे देता हूँ, जिसमें बलभद्रसिंह पुनः तुम्हारे सामने बोलने का साहस न कर सके, और तुम्हारा मुकदमा बिना किसी रोक-टोक के सुना जाकर शीघ्र समाप्त हो जाय।

इतना कहकर जिन्न ने अपने कपड़ों के अन्दर से एक सोने का कलम-

दान निकालकर उस सन्दूकड़ी के बगल में रख दिया, जो राजा बीरेन्द्रसिंह के सामने रक्खी हुई, और भूतनाथ के कागजात की गठरी में से निकाली गयी थी, अथवा जिसका हाल हमारे पाठक पहिले के किसी बयान में पढ़ चुके हैं।

यह कलमदान, जिसका ताला बन्द था, बहुत ही अनूठा और सुन्दर बना हुआ था। इसके ऊपर की तरफ मीनाकारी के काम की तीन तस्वीरें बनी हुई थीं, और उनकी चमक इतनी तेज और साफ थी कि कोई देखनेवाला, उन्हें पुरानी नहीं कह सकता था।

इस कलमदान को देखते ही भूतनाथ खुशी के मारे उछल पड़ा, और जिन्न की तरफ देखके तथा हाथ जोड़के बोला, "माफ करना, मैंने आपकी कुदरत के बारे में शक किया था। मैं नहीं जानता था कि आपके पास एक ऐसी अनूठी चीज है। यद्यपि मैंने अभी तक आपको नहीं पहिचाना, तथापि कह सकता हूँ कि आप साधारण मनुष्य नहीं हैं। आप यह न समझें कि यह कलमदान मुझसे दूर है, और मैं इसे अच्छी तरह से देख नहीं सकता। नहीं नहीं, ऐसा नहीं है, इसकी एक झलक ने ही मेरे दिल के अन्दर इसकी पूरी-पूरी तस्वीर खैंच दी है! (आसमान की तरफ हाथ उठाके) ईश्वर, तू धन्य है।"

भूतनाथ के विपरीत बलभद्रसिंह पर उस कलमदान का उलटा ही असर पड़ा। वह उसे देखते ही चिल्ला उठा और उठकर मैदान की तरफ भागा, मगर जिन्न ने फुर्ती के साथ लपककर उसे पकड़ लिया और बीरेन्द्रसिंह के सामने लाकर कहा, "भलमनसी के साथ यहाँ चुपचाप बैठो; तुम भागकर अपनी जान किसी तरह नही बचा सकते!"

केवल भूतनाथ और बलभद्रसिंह ही पर नहीं, बल्कि तिलिस्मी दारोगा पर भी उस कलमदान का बहुत बुरा असर पड़ा, और डर के मारे वह इस तरह काँपने लगा, जैसे जड़ैया बुखार चढ़ आया हो। बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और बाकी के ऐयारों को भी बड़ा ही आश्चर्य हुआ, और वे लोग ताज्जुब-भरी निगाहों से उस कलमदान की तरफ देखने लगे। इतने में चिक के अन्दर से आवाज आयी, "इस कलमदान को मैं भी ज़रा देखा चाहती हूँ!" यह आवाज कमलिनी की थी, जिसे सुनकर राजा बीरेन्द्रसिंह ने जिन्न की तरफ देखा और जिन्न ने जोश के साथ कहा, "हाँ हाँ, आप बेशक इस कलमदान को पर्दे के अन्दर भेजवा दें, क्योंकि लक्ष्मीदेवी और कमलिनी को इस कलमदान का देखना आवश्यक है। (तेजसिंह से) आप स्वयं इसे लेकर चिक के अन्दर जाइए।"

तेजसिंह कलमदान को लेकर उठ खड़े हुए, और चिक के अन्दर जाकर

कलमदान कमलिनी के हाथ में रख दिया। वहाँ किसी तरह की रोशनी नहीं थी, और पूरा अन्धकार था, इसलिए उन सभों को कलमदान अच्छी तरह देखने के लिए दूसरे कमरे में जाना पड़ा, जहाँ दीवारगीरों की रोशनी से दिन की तरह उजाला हो रहा था।

सिवाय लक्ष्मीदेवी के और किसी औरत ने कलमदान को न पहिचाना और न किसी पर उसका असर ही पड़ा, मगर लक्ष्मीदेवी ने जिस समय उसे उजाले में देखा, उसकी अजब हालत हो गयी। वह सिर पकड़कर जमीन पर बैठने के साथ ही बेहोश होकर, जमीन पर गिर पड़ी।

लक्ष्मीदेवी के बेहोश होने से एक हलचल-सी पड़ गयी और कमलिनी तथा कमला इत्यादि उसे होश में लाने का उद्योग करने लगीं। तेजसिंह कलमदान उठाकर और यह कहकर कि 'लक्ष्मीदेवी की तबीयत ठीक हो जानें के साथ ही बाहर खबर देना' बीरेन्द्रसिंह के पास चले आये और कलमदान सामने रखकर लक्ष्मीदेवी का हाल कहा।

इस मामले से सभों का ताज्जुब और बढ़ गया और बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से कहा—

बीरेन्द्र : इन भेदों को खोलकर आज अवश्य फैसला कर ही देना चाहिए।

तेज : मैं भी यही चाहता हूँ। (जिन्न की तरफ देखके) मगर यह बात बिना आपकी मदद के किसी तरह नहीं हो सकती!

जिन्न : जब तक राजा बीरेन्द्रसिंह आज्ञा न देंगे, मैं यहाँ से न जाऊँगा क्योंकि मैं भी इस मामले को आज खतम कर देना आवश्यक समझता हूँ, मगर तब तक सब्र कीजिए, जब तक लक्ष्मीदेवी की तबीयत ठिकाने न हो जाय और वे सब पर्दे के पास आकर बैठ न जाँय। हाँ, बलभद्रसिंह को कहिए कि वह उठकर अपने ठिकाने जाय और भाग जाने का ध्यान भूलकर चुपचाप बैठे।

बलभद्रसिंह की ताकत बिल्कुल निकल गयी थी, और वह सुस्त जहाँ-का-तहाँ बैठा रह गया था। तेजसिंह ने उसे उठाकर अपने बगल में बैठा लिया और थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा।

आधी घड़ी के बाद खबर आयी कि लक्ष्मीदेवी की तबीयत ठीक हो गयी और वे सब पर्दे के पास आकर बैठ गयी हैं।